बाचन्डुः आन् तोअउ

(बसन्त और कोयल)

लेखक :

सिकरा दास तिर्की

१९८७ ई०

प्रकाशक :
राजभाषा विभाग
बिहार सरकार, पटना

मूल्य : १० रुपये

मुद्रक :
श्री हलधर प्रेस
कचहरी रोड
राँची (बिहार)

भूमिका

मुण्डारी विश्व भाषा समुदाय रेअः आग्नेय च आष्ट्रिक भाषा परिवार रेअः मिअद् मइनन् भाषा तनः। भाषा वैज्ञानिक को नेअ बरिअ कोतो रेको हटिंअ कद (क) - आष्ट्रो - एशियाटिक आन् (ख) आष्ट्रो - नेशियन । बर् हिसि लाख लेक होड़ो कोअः ने भाषा भारत अते अष्ट्रेलिया जकेद् पसरओअ कन । दक्षिण - पूरब एशिया रेअः भाषा को आष्ट्रो - एशियाटिक आन् प्रायद्वीपीय भाषा को चिल्क चि इन्डोनेशिया, माइक्रोनेशिया, पोलेनेशिया, लेकन रः भाषा को आष्ट्रो - नेशियन रे जोगओअ कन।

भारत रे कजिओः तन् भाषा (आष्ट्रो - एशियाटिक) बिहार, बंगाल, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, आसाम आन् अन्डमान, निकोबर रेअः मुण्डारी, संथाली, हो, खड़िया, असुर, सवर, गादावा, जुअं, बोन्दो गेतः, गोरुम आन् खंसी भाषा को तन। मुण्डा हतु रेन् मुल् होड़ो हेके। नेअ तेगे मुण्डारी मूल बइ जन । संथाली, हो, खड़िया अर् असुर् नेअको मुण्डारी रेअः कोतो जगर् रे दोअ कन।

जगर् को लेकते लेल लेरे मुण्डारी रेअः उपुन् रोकोम् मेनः— हसद मुण्डारी, नगुरी मुण्डारी, तमाणिया मुण्डारी आन् केरः मुण्डारी। हसदः मुण्डारी रः क्षेत्र तल खूँटी - मुरहू अते सिंगि तुरोः रेअः क्षेत्र तनः। नेसः कोरः मुण्डारीरे एटः भाषा कोरः मेस बनोग एन मेन्ते नेअ पर्चि कजिअकन । नगुरी मुण्डारी— रेअः क्षेत्र खूँटी-मुरहू अते सिंगि अयुब् रः क्षेत्र तनः। आन् तोरपा, बानों, कोलेबिरा, बासिया कर्रा कोसः कोरे जगरोः तन। नेरे सदरी रेअः मेस मेनः। तमाणिया मुण्डारी— रः क्षेत्र तमाड़ हर् बुण्डू तनः। नेसः रेअः मुण्डारी रे बंगला रेअः प्रभाव मेनः। केरः मुण्डारी—रः क्षेत्र रांची अते अयर-तयोम् मुण्डा हर् उराँव बरन् समुदाय रे जगरोः तन। नेरे पुरःते हिन्दी रेअः मेस मेनः।

जुदि मुण्डा जगरबु लेल् लेरे दो नेक अटकरोः तन चि एटः भाषा कोरः सम्पर्क रे हिजुः जन तेगे नेरः चिमिन् कोतो मेनः। एनमेन्ते मुण्डारी साहित्य रेअः नव बइ नतेन् ने उपुनिअ गलेद् मुण्डा जगर्

आन् हिन्दी रेअः शब्द को अपन् जलोः सेन् लगति तन। खासे कजि दो नेअ चि अबुअः संस्कृति रः शब्द को अउ लगति तन।

मुण्डारी रेअः शब्द को जुदिबु लेल् लेरे, मुण्डा को देवनागरी लिपि रेअ महाप्राण रः उच्चारण (कजि) कबु दड़िअः। इमिन् रेओ एटः कोअः सम्पर्क रे आन् खिसिअकन् रे महाप्राण शब्द कोबु कजि जद। मुण्डारी रे विसर्ग रः व्यवहार पुरः नमोग। उच्चारण संस्कृत लेकः। नेरः तीन वचन मेनः— एक वचन - द्वि वचन - बहु वचन।

देवनागरी संसार रेअ वैज्ञानिक लिपि तनः। नेरे चिलक जगरोःअ एन्क ओलोःअ। इमिन् रेओ मुण्डा भाषा ओल् नतेन् ने लिपि रेअः ऋ, त्र, ष, ज्ञ, औ, कै लेकनः को कमिरे क अगुः तन।

नेते हुड़ि सिरमाते जन-जातीय एवं क्षेत्रीय भाषा कोरः अयर ते रकबोः सोमए नम कन। नेरः विकास नतेन् सरकारोएः अरणे कन। सरकारी कमि कोरे स्कूल - कोलेज कोरेटयद् नम कन। नव सइति (साहित्य) ओलोः तन। हड़ोः किताब्, पत्रिकाएं, आकाशवाणी अर् दूरदर्शन कोते प्रचारोः तन। मुण्डा भाषा नतेनो नेकगे निरल् होर बइअ कन।

ने कितब् "बाचन्ड् आन् तोअञ" अञः सिद उतर ओनोल् तनः। ने किताब ओल् रः गर्क अञ् हिसिर अरन् सेलेद रेन् लेखक डा० राम दयाल मुण्डा तेञ् नमन। बोकोञ् कुड़ि कुमारी बोचोन नः अचक गोनोएः ने कभि अयर् तेः रकब् किद। डा० मुण्डा सयोब् आन् प्रो० विनोद बराय नाग तकिं अञः दुरं किं सुदुरओ केद अर् किताब ओल् नं किं प्ररित किःञ। बिहार सरकार राजभाषा विभागः प्रकाशन अनुदान १९८६-८७ ई० रेअः टक ते ने किताब अबेनः ती रे मेनः। मेन्दो, जुदि नेअते अबेनः जी पेरे जन तोबे अञः जीओ पेरेगोःअ। ओकोएअः चि उनुदुब् हर् देंगते नेअ अबु तल रे मेनः, नेअ नतेन् अञ् बारोमेञ् अटकरेन् तन्। जे समते नेरे बगेअ कनः, गल्तिअ कनः हड़ोः क पुरकनः को मेनः। एन अञगः तनः। नेअ नतेन् चमञ् सनं तन।

—सिकरा दास तिर्की

भूमिका

मुण्डारी विश्वभाषा समुदाय की आग्नेय (Austric) या आष्ट्रिक भाषा परिवार की एक महत्वपूर्ण भाषा है। भाषा वैज्ञानिकों ने इसे दो वर्गों में बाँटा है (क) आष्ट्रो-एशियाटिक और (ख) आष्ट्रो-नेशियन लगभग ४० लाख आबादी की इस भाषा का विस्तार भारत से आष्ट्रेलिया तक है। दक्षिण-पूर्वी एशिया की भाषाओं को आष्ट्रो-एशियाटिक और प्रायद्वीपीय भाषाओं को जैसे-इन्डोनेशिया, माइक्रोनेशिया पोलेनेशिया आदि की भाषाएँ आष्ट्रो-नेशियन में शामिल है।

भारत में कही जाने वाली भाषा (आष्ट्रो-एशियाटिक) बिहार बंगाल, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, आसाम और अन्डमान निकोबार की मुण्डारी, संथाली, हो, खड़िया, असुरी, सवर, गादावा, जुअं, बोंदो, गेतः गोरूम और खांसी भाषाएँ हैं। मुण्डा गाँव के मूल होते हैं। उसी प्रकार इनकी भाषा मुण्डा भी मूल है। संथाली, हो, खड़िया, असुर इनकी शाखाएं हैं।

बोल चाल की दृष्टिकोण से मुण्डारी के चार प्रकार हैं हसदः मुण्डारी, नगुरी मुण्डारी, तमाड़िया मुण्डारी और केरः मुण्डारी। हसदः मुण्डारी—का क्षेत्र खुँटी-मूरहू, का पूर्वी क्षेत्र है। इस क्षेत्र की मुण्डारी में अन्य भाषाओं का सम्पर्क नही है। अतः इसे शुद्ध मुण्डारी की संज्ञा दी गई हैं। नगुरी मुण्डारी—का क्षेत्र, खुँटी-मूरहू से पश्चिम—तोरपा, बासिया, बानो, कर्रा आदि इलाकों में बोली जाती है। इसमें सदानी का सम्पर्क है। तमाड़िया मुण्डारी—इसका क्षेत्र तमाड़ और बुन्डू का क्षेत्र है। इसमें बंगला का प्रभाव है। और केरः मुण्डारी—यह मुण्डारी राँची के आगे-पीछे मुण्डा और उराँव दोनों समुदाय में बोली जाती हैं। इसमें हिन्दी का अधिक प्रभाव है।

यदि हम मुण्डारी पर दृष्टि डालें तो ऐसा प्रतीत होता है कि अन्य भाषाओं के सम्पर्क में आने के परिणामस्वरुप ही इनकी कई प्रकार हैं। अतः मुण्डारी साहित्य की नवसृष्टि हेतु इन चारों प्रकार की मुण्डारी और हिन्दी के शब्दों को लेकर चलना होगा। खास बात तो यह है कि हमारी संस्कृति के शब्दों को लेना होगा।

मुण्डारी के शब्दों को यदि हम देखें तो मुण्डा लोग देवनागरी लिपि के महाप्राण का उच्चारण नहीं कर पाते हैं। फिर भी अन्य लोगों के सम्पर्क में और क्रोधावस्था में महाप्राण शब्दों का उच्चारण कर लेते हैं मुण्डारी में विसर्ग का व्यवहार अधिक है। उच्चारण संस्कृत की तरह है इसके भी तीन वचन हैं - एक वचन, द्विवचन और बहु वचन।

देवनागरी संसार की वैज्ञानिक लिपि में से है। इसमें जैसे बोली जाती है, वैसा ही लिखा जाता है। फिर भी मुण्डारी लिखने में इस लिपि के ऋ, त्र, ष, ज्ञ, औ, कै आदि को प्रयोग में नहीं लाये जाते हैं।

इधर कई वर्षों से जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं को पनपने का मौका मिला है। इनकी विकास हेतु सरकार दृढ़ संकल्प है। सरकारी कामों, स्कूल, कॉलेजों में प्रश्रय दिया जा रहा है। नया साहित्य लिखा जा रहा है। और पुस्तकों, पत्रिकाओं, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के द्वारा प्रचार किया जा रहा है। मुण्डारी भाषा के साथ भी यही शुभ क्रम रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक "बाचन्ड़ः आन् तोअउ" यह मेरी प्रथम रचना है। इस पुस्तक के लिखने की प्रेरणा मुझे हिसिर और सेलेद मुण्डारी ग्रन्थ के लेखक डा० राम दयाल मुण्डासे मिली। बहन कुमारी बोचोन की अचानक मृत्यु ने इस काम को आगे बढ़ाया। डा० मुण्डा साहब तथा बिनोद बरय नाग, इन्होंने मेरी गीतों को सुधारे तथा पुस्तक लिखने की ओर प्रेरित किये। बिहार सरकार राजभाषा विभाग, प्रकाशन अनुदान १९८६-८७ ई० की रकम से यह पुस्तक आपके हाथ में है। लेकिन यदि इससे आपका दिल भरेगा तो मेरा भी दिल भरेगा। जिनके निर्देश और मदद से यह साकार हो पाया है, मैं उनके समक्ष आभार व्यक्त करता हूँ। जो भी इसमें अधूरा है, अशुद्धियाँ तथा छूट गया है, वह मेरा अपना है। इसके प्रति क्षमा चाहता हूँ।

—सिकरा दास तिर्की

पिच सकम्

जदुर्

ओर्जदुर

गेन

चिटिद्

करम्

जरग

❋

जोअर् जोअर् जोअर् बइकेनि: — नमन नमन नमन हे बनाने वाले

जोअर् जोअर् जोअर् बइकेनि:	— नमन नमन नमन हे बनाने वाले
बइअ कदम् चिमिन् निरल्	तू ने बनाया कितना सुन्दर
ओते रिम्बिल् सिंगि चन्दु:	ये धरती आकाश सूर्य और चाँद
निद सिंगि अंओ: अयुबो:	— रात दिन और सुबह-शाम
क लेलो: जीउ कुड़म् रे	— हृदय में अद्वस्य प्राण
हृटि कुटि मुटन् होड्मोरे	भिन्न भिन्नाकार जन्तु बदन में
अल बा लेक सुगड़ दो	खिला फूल सी सुन्दर
जिदन् रेअ: डिन्ड सोमए	— जीवन का युवा अवस्था
जिदन् तल सुकु दुकु	— जीवन के बीच सुख-दु:ख
जोनोम् हिजु: गोनोए: सेनो:	जन्म आना और मृत्यु जाना
जेटे जर्गि रत्र रतं कोअंसि	गर्मी वर्षा जाड़ा पाला कुहासा
ने ओते दिसुम् तल रे	— इस धरती देश के बीच में
दरु उम्बुल् जुम्बड़ रे	— वृक्ष की छा झबरायी में
चेणे होन् अमे: सनं तन्	पक्षी तुम्हें चाहता है
ओते रे बोंग कोच रे	तल पर मंदिर में
मनोअ होन् अमे: बोंग तन्	— मनुष्य तेरी पूजा करता है

ओकोए बइतद — किसने बनाया है

गड़ बुरु बिर् दरुते अयुअन ओते	— नदी पर्वत वृक्ष वन से ढंका यह भू
गतिञ् रे औकोए बइ लेद्	सखि किसने बनायी
सिंगि चन्ड़: इपिल् ते सिंगरन् सिरम्	सूर्य चंद्र तारों से श्रृंगारित आकाश
संगञ् रे चिमए बड़इलेद्	— सखि किसने रचा है
गड़ बुरु बिर् दरुते उयुअन् ओते	— नदी पर्वत वन वृक्ष से ढंका यह धरती
ओते रेन् मरं बोंगए बइयकद	भू के महादेव ने बनायी है
सिंगि चुन्ड़:इपिल् ते सिंगरन्सिर्म	सूर्य चाँद तारों से श्रृंगार यह आकाश
सिर्म रेन् सिम्बोंगए बइअ कद	— आकाश के सूर्यदेव ने सृष्टि की है

ओते रेन् मरं बोंगए: बइअ कद	—महादेव ने ही बनायी है
ओतेरे इलि मण्ड़िबु जोरोअइअ	हम धरती में दूध खाना चुवा दें
सिर्मं रेन् सिम् बोगए: बड़इअकद	आकाश के सूर्यदेव ने ही सृष्टि की है
सिंगि तुरो: समं रेबु जोअरइअ	—उसे हम सूर्यदेव के समक्ष प्रणाम करेंगे

❋

बाचन्ड़ः — बसन्त

बाचन्ड़ः बसन्ते दोए: तेबग कद	— फूलों का मास बसन्त आया है
बिरे दरु कोरे: बस तद	वन वृक्षों में बसा है
सुगड़ रसिक गे: अउअ कद	सुन्दरता और उमंग ले आया है
रामे राजा: रइजे: रइजिअकद	— राम राजा का राज कर बैठा है
कोते तेलेमेदो बिरे बुरु	— जिधर भी देखो वन-पर्व
लोदोब् लोदोब् बागे लेलो: तन	फूलों से लदा झबरा दिख रहा है
मोन्दोल् मोन्दोल् सोअन् ओटं तन	मनमोहक सुगन्ध उड़ रहा है
बा उरु कोदो बारे रुअं-रुअं	— भौरें फूलों पर झूम रहे हैं
गोट लेलेमेदो ओते दिसुम्	— धरती देश सब ओर देखो
जेंगेद् जेंगेद् अर: हरिअर पुन्डि	रंग बिरंगे लाल हरे-श्वेत
कुहु कुहु कुयूँ जुम्बड़ कोरे	कुहू - कुहू कोयल झुरमुट में
चेणे कोदो चलेन् चुदे बेड़	—
हेअर्ति मोनिञ रे चकतिसनञ्	— याद आती है चाह लगती है
बिरे दरु कोरे: बस तद	वन-वृक्षों में वसा है
हेअर्ति मोनिञरे चकति सनञ्	मुझे याद आती है चाह लगत्ती है
रामे राजा: रइजे: रइजि अकद	— राम राजा का राज कर बैठा है

❋

भारत बिरे दरु रे — भारत वन में

भारत बिरे दरु रे	— भारत वन - वृक्ष में
बालेन - सुड़ सेन	फूल खिले पल्लव निकले
सिंगर् लेन - शोभालेन	श्रृंगार हुआ - शोभा आयी
रंग - रंग बाते - सकम् ते	रंग - बिरंग फूलों - पत्तों से

बिरे रे - दरु जुम्बड़ रे	— बन में - वृक्ष झुरुमुटों में
तोअउ निरले: दुरं रे	कोयल मधुर गाती है
ओते रे रच दुअर् रे	धरती में द्वार - आँगन में
मनोअ को लन्द - जगर	— मानव हँस - बोल रहे हैं
नवं दरु जुम्बड़ बितरे	— नव वृक्ष के झुरमुटों में
चेणे को लन्द - जगर	पक्षीगण चहचहा रहे हैं
नवं ओते बोंग कोचरे	नव धरती पूजास्थल में
मनोअ को बोंग बुरुअ	— मानव पूजा पाट में हैं
ने जोतो गेदो मेन कन्	— यहीं सबको तो कहा गया है
ओते सिर्मकि कोनेअ बोर कन्	धरती आसमान वर-वधू हैं
ने जोतो गेदो सकिअ कन्	यहीं सबका तो नाम रखा है
ओते सिर्मकि अड़न्दिने तन्	- धरती आसमान शादी कर रहे हैं

❀

बसन्ते रितु बोले रकब् लेन — बसन्त ऋतु आया

बसन्ते रितु बोले रकब् लेन	— बसन्त ऋतु आया है
दरु - दरु बाको अल जन	हर पेड़ में फूल खिले हैं
सुकु रसिक चन्ड़: सकि जन	उमंगों का यह मास है
हतु - हतु दुमं सड़ि तन	— गांव - गाँव मन्दर गुंज रहा है
दरु - दरु बाको अल जन	— हर पेड़ में फुल खिले हैं
इसु सुगड़ सोअन् ओटं तन	सुन्दर गन्ध उड़ रही है
हतु - हतु दुमं सड़ि तन	गांव - गांव मन्दर गुंज रहा है
गोट दिसुम् सड़ि रुम्बुल कन	— सारा देश गुंज उठा है
इसु सुगड़ सोअन् ओटं तन	— सुन्दर गन्ध उड़ रही है
हुरुम् सुकु दोको सुकुअ कन	अलिण मस्त में है
गोट दिसुम् सड़ि रुम्बुल कन	सारा देश गुंज उटा है
मनोअ होने दोको सुसुन् तन	— मानव गण नाच रहे हैं

❀

विभीषण बोकोम् उदुब्तन्	— तेरा छोटा भाई विभीषण बतारहा है
राम राजाः रानी तनिः	वह (सीता) राम की रानी है
अएओ एन्ते जर्मा रअ	विभीषण उससे मिला हुआ है
नेक रे लंका उजड़ओःअ	— ऐसे में तो लंका भस्म हो जाएगा
दिसुम् तलं ब-ब चउलि	— हमारा देश धन दौलत
सोना चाँदी ते पेरेःअ कन्	सोना चाँदी से भरा पुरा है
एटः निअः जुड़ि कुड़ि	— दूसरे की विवाही स्त्री पर
जेत लेक रे अलोम् हिंसिग	— कभी भी ईष्या न करना
अलोम् ओपोतएतेरंअ	— युद्ध झगड़ा मत करो
गोएः चिको गोएः तमेगे	तुम कहीं मारे तो न जाओ
अञः विन्ती अपयुम् मे	मेरी विनती मान लो
कुलुड़ तइम् कुलुड़ तइम्	— इसे वापस कर दो वापस कर दो

※

डिण्ड सोमए / युवा अवस्था

ने सोमए डिन्ड सोमए	— यह अवस्था युवा अवस्था
ने सोमए इसु रसिक	यह अवस्था बड़ा आनन्द का
रे नुसड़ डंगुअ नुसड़	यह अवस्था कुवांरा अवस्था
ने नुसड़ बरे चएल	— यह अवस्था बड़ा छैलापन का
ने सोमए इसु रसिक	— यह अवस्था बड़ा आनन्द का
ने सोमएः गोले दुरंअ	यह अवस्था सिसकी गाने का
ने नुसड़ बरे चएल	यह अवस्था बड़ा छैलापन का
ने नुसड़एः रुतु-बनम्	— यह अवस्था बाँसी-बनम करने का
ने सोमए सेनोः जने रे	— यह अवस्था गुजर जाने पर
जिदन् रे बनोः रसिक	जीवन में आनन्द नहीं है
ने नुसड़ बिरिदे जनेरे	— यह अवस्था चले जाने पर
जिदन् रे बनोः चएल	— जीवन में छैलापन नहीं है
जिदन् रे बनो रसिक	— जीवन में आनन्द नहीं है
कमि उदम् उड़ः पिकिर	काम-खोज की चिन्ता फिकर में
जिदन् रे कनोः चएल	जीवन में छैलापन नहीं है
टकब् टुकुब् गोनोएः होर रे	— लकुटी के सहारे मृत्यु राह पर

※

बोंग सिम्	पूजा मुर्गी
अम्दो दइ बोंग सिम् जिलु उतु	— दीदी, तुम्हें पूजा मुर्गी की तीयन
अम्दो दइ कले ओम म	— दीदी हम तुम्हें नहीं देंगे
अमदो दइ तपन् इलि टेन्डः रसि	दीदी, तुम्हें पूजा हड़िया का रस
अम्दो दइ कले चेद म	— दीदी, हम तुम्हें नहीं देंगे
अम्दो दइले गोंए तदेम	— दीदी, हम तुम्हें शादी कर दिये
अम्दो दइ कले ओम म	दीदी, हम तुम्हें नहीं देंगे
अम्दो दइले चले तदे म	दीदी, हम तुम्हें विदा कर दिये
अम्दो दइ कले चेद म	— दीदी, हम तुम्हें नहीं देंगे
हेअप्रतिं मोनिञरे चकतिं सनञ्	— मुझे चिन्ता है फिकर हैं
सिम्बोंग एटेः रेगे बइअ कन	(पर) मुर्गी पुजा के श्री गणेश में बना है
हेअतिं मोनिञरे चकसिंनञ्	मुझे चिन्ता है फिकर है
हड़म् बुड़िया कोगे चोलोन कद	— (पर) पुर्वजों ने ही ऐसा चलन किया हैं

❀

सानेम् मग चिरे सकमेम हेग - प्रिया लकड़ी काटोगी या पत्ता तोड़ोगी

सानेम् मग चिरे सकमेम् हेग	— प्रिया, लकड़ी काटोगी या पता तोड़ोगी
सानेम् मगे रेदो सउड़ि पिड़ि	यदि लकड़ी काटोगी तो खेर टाँड़ (जाना)
सानेम् मग चिरे सकमेम् हेग	प्रिया लकड़ी काटोगी या पत्ता तोड़ोगी
सकमेम् हेगे रेदो सिसि बगुटु	— यदि पत्ता तोड़ोगी तो सिसि फूल वन
सानेम् मगे रेदो सउाड़ पिड़ि	— यदि तुम लकड़ी काटोगी तो खेर टाँड़
सउड़ि पिड़ि रेगे उरिःञ् गुपि	मैं वहीं गाय चराऊँगा
सकमेम् हेगे रेदो सिसि बा गुटु	यदि तुम पता तोड़ोगी तो सिसि फूल वन

सिसि बा गुटु रेंगे मेरोमेञ् पसर्	— मैं, वहीं बकरियाँ चराऊँगा
सउड़ि पिड़ि रेलं नपम् रेदो तीरेञ् ओम् मेअं सोंगोति मुन्दम्	— यदि खेर टाँड़ में हम मिलेंगे तो मैं तुम्हें हाथ में संगति अंगुठा दूँगा
सिसिबा गुटु रेलं चिपिन रेदो होटोः रेञ् चेद मेअं पिरिति माला	यदि सिसि फूल वन में मिलेंगे तो — मैं तुम्हें गले में प्रीत माला दूँगा

*

जुड़ि रुतु — जोड़ा बांसी

ददय जुड़ि रुतु तुड़ि रुड़ि ददय बइअलं मे ददय जोत रुमल् जिरे टपए	— भाई, तिरि-रिरि जोड़ा बाँसी भाई, दम दोनों के लिये बनाओ भाई, जोड़ा रुमाल लहराने तिराने का
ददय बड़ःइअ लं मे	— भाई, हम दोनों का बनाओ
ददय बुरु रेलं ओरोंएअ ददय बइअलं मे ददय सुसन् रेलं जिरेअ ददय बुड़इअ लं में	— भाई, हम मेला में बजायेंगे भाई, हम दोनों का बनाओ भाई, नृत्य में लहरायेंगे — भाई, हम दोनों का बन.ओ
ददय रसिक को मेत लंअ ददय बइलं मे ददय चएलको मेत लंअ ददय बड़ःइअ लं मे	— भाई, हमें लोग रसिक बोलेंगे माई हम दोनों का बनाओ भाई, हमें लोग छैला कहेंगे — भाई, हम दोनों का बनाओ

*

जोजो बुरु — इमली पहाड़

कट तञ्दो जोजो बुरु रे मेद् तञ्दो जलतिं जन् अटमट बिरे को तल रे रिम्बिल् तुरुब् बुरु चुटि रे	— मेरा पैर जोजो पहाड़ पर मेरे आँख मंडराये घनघोर वन विपिन में — आकाश छूता पर्वत पर

लुतुर् तञ्दो कुहु-कुहु रे	— मेरा कान कुहू-कुहू में
तोअउ चेणे दुर सड़ रे	कोयल की गीत गुंज में
जी तञ्दो लिपिर् होयो रे	मेरे प्राण मन्द-मन्द वायु में
मोगो-मोगो बा सोअन् रे	— पुष्प की खुशबु में
होड़ोमो तञ् कुन्ट गे कुन्ट कन्	— मेरा बदन खूटा सा खड़ा है
बुरु चेतन् सलि सुब रे	पर्वत पर साली वृक्ष की छा में
सुकन बुरु मरंहदा बंगेला	सुकन पहाड़-मरंहादा बंगला
सलंगिञ् सलंगि हुड़ि अन	— मैं उस से थोड़ा नीचा में हूं
चंचलु बुन्ड बुरु चुकु-चुकु	— चंचालु बुन्डु पहाड़ की चोटि
रिम्बिल्टुन्ड तेकिन् कोयोः तन्	आसमान (क्षितिज) से हुलक रहे हैं
उत्तर दख्खिन् बुरु हट हुटुअ	उत्तर दक्षिण पहाड़ों की ताह
गेन गेनते जंगिअ कन	— दोनों किनारे से ओटगें हुए हैं

जःउदुर् अकड़ — जदुरा अखाड़ा

जओ जदुर् अकेड़ रे मइन	— लड़की परम्पारिक जदुर अखाड़ा
गतिअन् सुसुनने मे	जोर लो नाच लो
रसिकते सिसिःअने मे	उमंग की सिसकियां भर लो
सोमए अलोम् निरे बगेअ	— समय को छोड़ मत जाना
जिदन् रे ओको सोमए	— जिन्दगी में किस बक्त
चि चिकओः ओकोए इतुन्	क्या होगा कौन जानता है
रसिक डिन्ड सोमए	उमंगों का कुवारा अवस्था
अलो रेम् निरे बगेअ	— तुम छोड़ कर मत जाना
दरु सकम् उरुड़ जनेरे	—वृक्ष के पत्ते झड़ जाने पर
एन बतिः सुड़ रुड़ओः	फिर वह पल्लव आता है
ने सोमए सेनोः जनेरे	यह अवस्था गुजर जाता है तो
दणए रेओ क नमोग	खोजने पर भी नहीं मिलता
सोना चाँदी अदे जनेरे	— सोना चाँदी के खो जाने पर
एन बतिः किरिं नमोग	उसे हम खरीद पा सकते हैं

ने जीउ सेनोः जनेरे	इस प्राण के चले जाने पर
जेत रेओ क नमोग	— कहीं भी मिल नहीं सकता
जीतबु सिस बस	— हमारा जी सीसा-बासा है
होयो लेक मेनः होड़ो रे	हवा की तरह बदन में है
रणु जिअण दुकुरेः देगअ	दवा बुटि दुःख में मदद करता है
गोयोः सोमए जेतए बंगःइअ	मरने की घड़ि कोई नहीं है
गोएः जन्रे होड़ोमो हसरे	— मर जाने से बदन मिट्टी में
होयोः जी दो होयो रे	वायु प्राण भी वायु में
जीरं सेण ओड़ टक सम गे	मन में ज्ञान घर रुपया बेकार
जिउ दन् रे नमनः बुगिन	— जिन्दगी में उपयोग ही अच्छा है
बा लेकन् डिन्ड सोमए	— फूल सी यह युवा अवस्था
सम रे अलोम् निरे इरि	तुम यों न जाने देना
ने जिउदन् तिसिं गपनं	यह जिन्दगी आज या कल के लिए
सोमए तम् नः नएःकेनं	— तेरी जवानी अभी तभी के लिए

❀

टुकु चेतन् दरु सुबरे — टोंगरी पर पेड़ के नीचे

टुकु चेतन् दरु सुबरे	— टोंगरी पर पेड़ के नीचे
अञ्गे गो तंगि तन	— मैं तेरी इन्तजार कर रहा हूँ
निद रटिः निरे तन	रात गुजरने वाली है
बेड़ जेतए कएः तगिअ	—समय किसीका इन्तजारी नहीं करता
जेतरे गो कमे लेलोग	— प्रिया, तुम कहीं दिखाई नहीं पड़ती
ओको दरु सिं सुब रेम्	तुम किस वृक्ष के नीचे हो
चिते गोम् दुडुम् जनचि	कि तुम सो गयी क्या
ओको सुकु सिविलेरे	— किस सुख की नींद में
बदुलि गोए जवँरिञ्रे	— मुझे चमगादड़ झपटता है
अम्गे गोञ् मेने लेकः	मैं तेरा अनुमान करता हूं
हेटेटेओदेः रः जलति रे	हेटेटेओद (पक्षी) बोल उठती है
अम् गोञ् बोर्स लेकः	— मैं सोचताहूं कि तुम आती हो

बेड़ गो निरे जन	— प्रिया, वक्त तो गुजर गया
असरओ टुन्डु जन	आशा भी टूट गया
लेदेम् लेदेम् लेदेररे	गद्दीदार लेदरा में
ओको सिबिल् दुड़मे रेम्	— तुम किस सुख की नींद में हो

❊

दुरं तन चिरेम् रगे तद	**तुम गा रही हो या रो रही हो**

दुरं तन चिरेम् रगे तन	— तुम गा रही हो या रो रही हो
दरु जुम्बड़ रेम् कुहू कुहू	वृक्षों की झुरमुट में कुहू - कुहू
दुरं तन चिरेम् रगे तन	तुम गा रही हो या रो रही हो
नेअं दरु अदे हन दरु	इस पेड़ से उस पेड़ में
दरु जुम्बड़ रेम् कुहू कुहू	— वृंक्षों की झुरमुट में कुहू-कुहू
बिरे बुरु गोटम् अंदोड़ो तद	वन-पर्वत सर्वत्र गुंज भरी है
नेअं दरु अते हन दरु	इस पेड़ से उस पेड़ में
दण तन चिरेम् जारु तन	— खोज रही हो या गप कररही हो
हुड़िं गड़ि कुइलिह्पे कोःम्	— कोयल तुम छण भर चुप हो जा
गतिएः दुरंएरेञ् अतेन् लिअ	मेरी प्रिया गायेगी तो मैं सुन लूँ
बुरु अते जेत रेकएः लेलोःतन	पहाड़ से कहीं दिख नहीं रही है
मर कुइलिम् नमि रेदो कुलेलिमे	— कोयल उसे पाओगे तो भेज दो

❊

हटिअ चएल	**हटिया छैल**

चएल हटिअ चएल	— छैला हटिया छैला
ती रे पितल रुतु	हाथ में पीतल का बाँसी
चएल डरे चएल	छैला राह छैला
होटोः रे रंग गमेच	— गले में रंगीन गमछी
तीरे पीतल् रुतु	— हाथ में पीतल का बाँसी
अलो रेम् ओरोंएअ	तुम मत बजाओ

होटो: रे रंग गमेच	गले में रंगीन गमछी
अलो रेम् जिरे टपय	— तुम मत लहराओ
अलो रेम् ओरोंएअ	— तुम मत बजाओ
अम्लो: ते लेनो: मोनिञ	मुझे तेरे साथ जाने का मन करता
अलो रेम् जिरे टपय	तुम मत लहराओ
अम्लो: ते बिरिदे सनञ	— मुझे तेरे साथ जाने का मन करता
अमलो: ते सेनो: मोनिञ	— मुझे तेरे साथ जाने का मन करता
अम्लो: ते गति सोंगोति	तेरे साथ प्यार करने कामन करता
अम्लो: ते बिरिदे सनञ	— मुझे तेरे संग जाने का मन करता
अम्लो: ते हिति पिरिति	तेरे साथ हित - प्रीत का

जोनोम् हतु चिरे इनुं पिड़ि — जन्म ग्राम या क्रीड़ा स्थल

जोनोम् हतु चिरे इनुं पिड़ि	— जन्म ग्राम या क्रीड़ा स्थल
इनुं पिड़ि दोरेम् बगे जद	तुम क्रीड़ा स्थल छोड़ रही हो
सिद गति चिरे सुसुन् अकड़	पूर्व दोस्त या नृत्याखड़ा
सुसुन् अकड़ दोम् रड़ जद	— तुम नृत्याखड़ा छोड़ रही हो
इनुं पिड़ि दोरेम् बगे जद	— तुम क्रीड़ा स्थल छोड़ रही हो
किअ सिंदुरि तेम् बगे जद	कोया सिंदूर से छोड़ रही हो
सुसुन् अकेड़ दोम् रड़ जद	तुम नृत्याखड़ा त्याग रही हो
लोगोन् ससंएतेम् रड़ जद	लगन हल्दी से त्याग रही हो
हेअंति मोनिञरे चकंति सनञ्	— मुझे दु:ख है मुझे चिन्ता है
किअ सिंदुरि तेम् बगे जद	कांया सिन्दूर से छोड़ रही हो
हेअंति मोनिञरे चकंति सनञ	मुझे दु:ख है मुझे चिन्ता है
लोगोन् ससंएतेम् रड़ जद	लगन हल्दी से त्याग रही हो

हतु तलेम् मेनेअं म न — लड़की तुम हमारा गाँव कहती हो

हतु तलेम् मेनेअं मइन	— लड़की तुम हमारा गाँव कहती हो
हतु दोम् बगे जद	तुम, गाँव छोड़ रही हो
दिसुम् तलेम् मेनेअं मइन	लड़की, तुम हमारा देश कहती हो
दिसुम् दोम् रड़ जद	— तुम देश छोड़ रही हो

हतु दोम् बगे जद	— तुम गाँव छोड़ रही हो
डुगुमुगु चउडले ते	डुगमुग पालकी से
दिसुम् दोम् रड़ जद	तुम देश छोड़ रही हो
रडगुड बजोंणि ते	— रडगुड बाजा के साथ
दिदि लेक जलतिं मे	— तुम गीध की तरह उड़ लो
ओको कोन पुरः बुगिन	किस कोना सर्व सुन्दर है
डुलुः लेक बुलतिं मे	तुम डुन्डली की तरह भुलो
चिमए कोन पुरः नपय	— किस कोना जादा उपयुक्त है
ओको कोन पुरः बुगिन	— किस कोना सर्व सुन्दर है
एन्डे गे हड़गुने मे	तुम वहीं उतर (रह) जाना
चिमए कोन पुरः नपय	किस कोना जादा उपयुक्त है
एन्डे गे नोसोरेने मे	— तुम वहीं उतर जाना

सुकन् बुरु	सुकन पहाड़
सोबेन् सोबेनते सलगि बुरु	— सबसे ऊँचा पहाड़
सुकन् बुरु चेतन् बुरु रेबु	हम सुकन पहाड़ के ऊपर मे लामें हैं
बिउर् बिउर् बिर्ते बिउर कन	चारो ओर वन से घिरा है
हतु टोल रेअः बनोः मुन्डि	— गाँव टोलों का कहीं पता नहीं है
एल लेलनबु दोल होनोरनबु	— आओ, हम देखें चलो हम घूमे
सुकन् बुरु बुरुबु नुमनबु	हम सुकन पहाड़ के मेला का नाम रख लें
एल सुसुनबु दोल दुर् अनबु	आओ, हम नाचें चलो हम गायें
बुरु पिड़ि अकेड़बु दखलनबु	— हम मेले का अखाड़ा दखल कर लें
चेतन् रं पिर्कल्को ओटं तन	— ऊपर में पतंगे उड़ रहे हैं
दिदि कुड़िद् जाजे लेक लेलोःतन	गीध चील वायुयान सा लग रहा है
बुरु रे नगर डुल्कि रुम्बुलतन	मेला में ढोल नगाड़ा गूंज रहा है
जर्गि दः रिम्बलेः सड़ि लेक	— बरसात में जैसा बादलगरजता है
गुलि जन् रे निमिन् दरअं	— लुढ़क जाने पर इतना ढालू है
जं जिलु क सरेगो;अ	हड्डी मांस भी न बच पायेगा
बगे जन् रे निमिन् बिर	बिछुड़ने पर इतना वन है
हँति कुल बन हड़ोगओ	— हाथी बाघ भालू और सियार भी

सिंगि चिल्कए: हसुरे लेन्	— जैसा ही सूर्यास्त हुआ
गोट एन्क नुब: चब जन्	वैसा ही अन्धकार छा गया
दिरि जोल बिर् बुरु चोरद्	पत्थर चढ़ान वन पहाड़ फिसलन
सेने होर मुन्डि बनो: जन्	— गमन की राह नहीं बुझाता
होर नुबग कले कुले तन्	— रास्ता घोर अन्धकार में है
होड़ो होड़ो रे बनो उपुरुम्	आदमी आदमी में पहचान नहीं
रबं तन कुन्डु-कुन्डु तन्	जाड़ा लग रहा है कंपकपी
तेते: तुरो: तल निद	— चाँदनी आधी रात को आयेगी
दिअ पनसु पिलिद पिलिद्	— दीया ढिबरो झीड़िप झीढ़िप
बुरु चेतन् बुरु गेन रे	पहाड़ के ऊपर और नीचे
चिलक दसंइ चन्ड़: नुबरे	जैसा कि दशहरा मास में
इपिड़ि पिर्उको जिड़िप जिड़िपे	— जुगनु गण झिलमिलाते हैं

❀

मागेफागुन् चन्ड़:	माघ फागुन मास
मागे फागुने दो तेब: लेन	— माघ फागुन का मास आया
सोबेन् दरु सकम् उरुड़ जन	वृक्ष के पत्ते झढ़ गये
सोबेन् दरु सकम् उरुड़् जन्	वृक्ष के पत्ते झड़ गये
गोट दिसुम उजड़ जन	— सारा देश उजाड़ हुआ
अञ: जीओ उजड़ जन	मेरा मन भी उदास हुआ
अञ: जिओ उजड़ जन्	— मेरा मन भी उदास हुआ
नवं नवं सकम् सुड़ लेन	— नव-नव पत्ते निकल आये
जेंगेद् जेगेद् दिसुम् लेलो: तन	रंग-बिरंग देश प्रतीत हुआ
जेंगेद् जेंगेद् दिसुम् लेलो: तन्	— रंग-बिरंग देश प्रतीत हुआ
दरु दरु बा दो अल जन	— हर वृक्ष में फूल खिले
अञ: जीओ अल जन	मेरा मन भी खिल उठा
अञ: जीओ अल जन्	— मेरा मन भी खिल उठा
सुड सकम् मोल जन	— पल्लव पत्ते हरे हो गये
लोदोब् लोदोब् दिसुम् लेलो: तन	लदे झबरे देश प्रतीत हुआ
लोदोब् लोदोब् दिसुम् लेलो: तन्	— लदे झबरे देश प्रतीत हुआ
तोअउ चेणें एन्डे: दुरं तन	— इसमें कोयल गा रही है

अञः जीओएः दुरं तन	मेरा मन भी गा उठा
अञः जीओएः दुरं तन्	— मेरा मन भी गा रही है
जयर सुब बोंग बुरु	— जयर थान में पूसा-पाट
ओते सिर्मको बोंगइ तन	धरती-आकाश की पूजा है
ओते सिरमको वोंगइ तन्	— धरती-आकाश की पूजा है
डंगड़ दंगिड़िको सुसुन् तन	— युवक-युवती नाच रहे हैं
अञः जीओएः सुसुन् तन	मेरा मन भी नाच रहा है
अञः जीओएः सुसुन् तन्	— मेरा मन भी नाच रहा है

❊

दे-गा नेअं	दो माँ
दे-गा नेअं-देग नेअं	— दो माँ दो माँ
बोंग सुटि सकोअं गा	देव गूंधी शंख माँ
बोंग सुटि सकोअं	देव गूंधी शंख
दे-गा नपं-देगा नपं	— दो पिता-दो पिता
अगोम् अःसर्कपि गा	पूजा तीर-धनुष बा
अगोम् अःसर्कपि	पूजा तीर-धनुष
दे-गा नेअं-दे-गा नेअं	— दो माँ-दो माँ
सेन्देरको सेनोः तन गा	शिकार में सब जा रहे हैं
सेन्देरको सेनोः तन्	शिकार में जा रहे हैं
दे-गा नपं-दे-गा नपं	— दो पिता दो पिता
करेंगको बिरिदे तन गा	शिकार में सब जा रहे हैं
करेंगको बिरिदे तन्	शिकार में सब जा रहे है
दे-गा नेअं-दे-गा नेअं	— दो माँ-दो माँ
सेन्देर रेञ् नोरों एअगा	शिकार में मैं बजाऊँगा माँ
सेन्देर रेञ् नोरींए	शिकार में मैं बजाऊँगा
दे-गा नपं-दे-गा नपं	— दो पिता-दो पिता
करेंगे रेञ् टोः लिअगा	शिकार मैं कर सकूँ बा
करेंग रेञ् टोःलि	शिकार मैं कर सकूँ

❊

बुरु चेतन् बा सुबरे	**पहाड़ पर फूल के नीचे**
बुरु चेतन् बा सुबरे	— पहाड़ पर फूल के नीचे
रोलो-रोलो मेद् दःम् जोरोय	झरझर तुम आँसु बहा रही हो
रोलो-रोलो मेद् दःम् जोरोय	झरझर तुम आँसु बहा रही हो
बेड़ लतर् डलि सुबरे	— पहाड़ के नीचे पेड़ की छाये में
सड़ि मचिरे मेद् दःम् गोसोःय	साड़ो, आँचल में तुम आँसु पोछती हो
सड़ि मचिरे मेद् दःम् गोसोःय	साड़ी, आँचल में तुम आँसु पोछती हो
ओकोए रेःएरं केःम	— प्रिया, तुमको किसने डाटा (कि)
रोलो रोलो मेद्दःम् जोरोय	झरझर तुम आँसु बहा रही हो
रोलो रोलो मेद्दःम् जोरोय	झरझर तुम आँसु बहा रही हो
चिमए रे-सेकेद् गेदेम	— प्रिया, तुम्हें किसने फटकारा (कि)
सड़ि मचि रे मेद्दःम् गोसोःय	साड़ी, आँचल में तुम आँसु पोछती हो
सड़ि मचिरे मेद्दःम् गोसोःय	साड़ी, आँचल में तुम आँसु पोछती हो
एंगम् रेःएरं केदेम	— क्या माँ ने तुम्हें डाटा (कि)
रोलो रोलो मेद्दःम् जोरोय	झरझर तुम आँसु बहा रही हो
रोलो रोलो मेद्दःम् जोरोय	झरझर तुम आँसु बहा रही हो
अपुम रेः सेगेंद केदेम	क्या तुम्हें पापा ने फटकारा (कि)
सड़ि मचिरे मेद्दःम् गोसोःय	साड़ी, आँचल में तुम आँसु पोछती हो
सड़ि मचिरे मेद्दःम् गोसोःय	— साड़ी, आँचल में तुम आँसु पोछती हो

रेंगेः तेचि कुइली तेतं तेचि	**कोयल, भूख या प्यास से**
रेंगेः तेचिरे कुइली तेतं तेचि	— कोयल, भूख या प्यास से
कुहु कुहुम् रगे बेड़ए	तुम कुहू-कुहू बोलती फिरती हो
कुहु कुहुम् रगेअ	— तुम कुहू-कुहू बोलती फिरती हो
जेटे तेचिरे कुइली तेतं तचि	— कोयल, धूप से या प्यास से
दरु दरुम् दण बेड़ए	वृक्ष वृक्ष खोजती फिरती हो
दरु दरुम् दणय	— वृक्ष-वृक्ष खोजतो फिरती हो
गतिम् चिरे कुइली बंगःइअते	— कोयल, तेरा दोस्त नहीं है क्या
कुहु कुहुम् रगे बेड़ए	तुम कुहू-कुहू बोल फिरती हो
कुहु कुहुम् रगेय	— तुम कुहू-कुहू बोल फिरती हो

संगम् चिरे कुइली बंग:इअते	—	कोयल तेरा प्रिय नहीं है क्या
दरु दरुम् दण बेड़ए		तुम तरु-तरु ढूंढ़ फिरती हो
दरु दरुम् दड़य	—	तुम तरु-तरु ढून्ड फिरती हो
निद सिंगि कुइलीम् उड़:तन	—	कोयल, तुम दिन-रात चिन्ता में हो
सिंगि सटुबेञ् अयुम् मेअ		मैं तुम्हें दिन भर सुनता हूं
सिंगि सटुबेअ् अयुम् म	—	मैं तुम्हें दिन भर सुनता हूं
निद सिंगि कुइलीम् पिकिर तेन	—	कोयल दिन-रात फिकर में हो
अदि निदञ् अतेन् मेअं		मैं तुम्हें आधी रात को सुनता हूं
अदि निदञ् अतेन् म	—	मैं तुम्हें आधी रात को सुनता हूं

❊

सर्जोम् बा — साखू फूल

सर्जोम् बा, बारे गतिञ्	—	साखू फूल, सरहुल में प्रिया
बहरे रसिक		बाह रे उमंग
सुड़ संगेन्, डलि रे संगञ्		पल्लव फूल, सरहूल में साखी
भलरे चएल	—	भला रे छैला
ओकोए नं, बारे गतिञ्	—	किसके लिए सरहुल में प्रिया
बहरे रसिक		बाह रे उमंग
चिमए नं, डलि रे संगञ्		किसके लिये, सरहुल में सखी
भल रे चएल		भला रे छैला
सिम्बोंग नं, बारे गतिञ्	—	मुर्गे पूजा (धरती माँ) के लिये,सरहुल में
बह रे रसिक		बाह रे उमंग
टेन्ड: इलि नं, डलि संगञ्		हड़िया ढालने के लिये, सरहुल में
भल रे चएल	—	भला रे छैला

❊

मोद् दुम्ब सर्जोम् बा — एक झोपा साखू फूल

दा दइ दा	—	दो दीदी दो
मोद् दुम्ब सर्जोम् बा		एक झोंपा साखू फूल
दा दइ दा		(और) दो दीदी दो
सुड़ संगेन्	—	पल्लव फूल

दा दइ दा — दो दीदो दो
गुइरमेञ् बा लिअ मैं अतिथि (गुइराम) को पहना हूं
दा दइ दाञ् दो दीदी दो
डलि लिअ — इसे पल्लव पिरा दूँ

दा दइ दा — दो दोदी दो
सुपिद् पेरे:ञ् बा लिअ मैं इसे खोपा भर पहिना दूँ
दा दई दाञ् दो दीदी दो
डलि लिअ — पल्लव पहिना दूँ

❀

अम् दोरे सर्जोम् बा गतिअ् **साखू फूल, तू मेरा मित्र**

अम् दोरे सर्जोम् बा गतिञ् — साखू फूल तू मेरा मित्र
उरए केन् बरए केन् मुस्काये हो खिले हो
अम् दोरे सुड़ संगेन् संगञ् पल्लव फूल, तू मेरा मित्र
तिन्जर् केन् तिन्जोर् केन् — तने हो लतराये हो

अम् दोरे बा उरु गतिञ् — भौंरा तुम मेरा मित्र
रुअं केन्-रुअं केन् मंडराये हो मंडराये हो
अम्दोरे पम्पलद् संगञ् तितली तुम मेरा मित्र
पलद् केन् पिलिद् केन् — झिलमिलाते हो चमकते हो

अञ् गेरेम् हेन्दो तन गतिञ् — मित्र, तुम मुझे हँसवाने में हो
उरए केन् बरए केन् मुस्काये हो खिले हो
अञ् गेरेम् हिड़ि तन संगञ् मित्र, तुम मुझे लुभाने में हो
तिंजर् केन् तोंजोर् केन् — तने हो तनआये हो

बा गेरेम् होरे तन गतिञ् — मित्र, फूल ही ओघारे हो
रुअं केन् रुअं केन् मंडराये हो मंडराये हो
डलि गेरेम् पन्ति तन संगञ् मित्र, पल्लव ही अपनाने में हो
पलद् केन् पिलिद् केन् — झिलमिलाते हो चमकते हो

बा करे कोरेञ् जिदो: गतिञ् — मित्र, मैं फूल के बिना जिन्दा कैसे रहूंगा
अमो ओकोए लो:म् जगर् तुम भी तो किससे बात करती
डलि करे कोरेञ् दुब संगञ् मित्र, पल्लव के बिना मैं बैठूंगा किसमें
अमो ओकोए लो:म् लपन्द: — तुम भी तो किस से हास करती

एल करे हड़गुन् ने गतिञ्	— मित्र, नहीं तो तुम उतर आओ
मिदे रेलं लन्द-जगरे	हम दोनों साथ हँसेंगे-बोलेंगे
एल करें नोसोरेन् मे संगञ्	मित्र, नहीं तो तुम उतर आओ
मोदे रेलं सुसुन् करम	— हम दोनों साथ में नाचेंगे-गायेंगे

❀

दा तञ् दा अलोम् सबेअ — दो मेरी दो, तुम मत पकड़ो

दा तञ् दा, अलोम् सबेअ	— दो मेरी दो, तुम मत पकड़ो
दा तञ् दा, अलोम् रचःय	दो मेरी दो, तुम मत खिंचो
दा तञ् दा, रंग गमे च	दो मेरी दो, रंगीन गमछी
दा तञ् दा, पोचोन् पड़िय	— दो मेरी दो, पचन पड़िया
दा तञ् दा, रंग गमेच	— दो मेरी दो, रंगीन गमछी
दा तञ् दा, सुसुन् तेलंअ	दो मेरी दो, हम दोनों नाचने चलें
दा तञ् दा, पोचोन् पड़िअ	दो मेरी दो, पचन पड़िया
दा तञ् दा, करमे तेलंअ	— दो मेरी दो, हम चलो नाचने चलें
दा तञ् दा, रंग गमेच	— दो मेरो दो, रंगीन गमछी
दा तञ् दाञ् , जिरे टपए	दो मेरी दो, मैं लहराऊ फैलाऊँगा
दा तञ् दा, पोचोन् पड़िय	दो मेरी दो, पचन पड़िया
दा तञ् दाञ् , जिरे टपए	– दो मेरी दो, मैं लहराऊ फैलाऊँगी

❀

'अम्दोअ' — 'तुमतो'

ओकोतेम तनय	— तुम कहाँ जा रही हो
रंग पड़िअ	रंगीन पड़ियाम्बर
'अम्दोअ'	'तुमतो'
चिमए तेम् तनय	तुम किधर जा रहे हो
रंग गमेच	— रंगीन गमछाम्बर
क चिअम् अयुम् जद	— क्या तुम्हें सुनाई नहीं पड़ रही है
रंग पड़िअ	रंगीन पड़ियाम्बर
'अम्दोअ'	'तुमतो'
क चिअम् अतेन् जद	क्या तुम्हें सुनाई नहीं पड़ रही है
रंग गमेच	— रंगीन गमछाम्बर

सुसुन् तेम् तनय	तुम नाचने जा रही हो
रंग पड़िअ	रंगीन पड़ियाम्बर
'अम्दोअ'	'तुमतो'
करमे तेम् तनय	तुम नाचने जा रहे हो
रंग गमेच	— रंगीन गमछाम्बर
मज दोअम् लन्द जगर	— तुम सुन्दर तो हँसती बोलती हो
रंग पड़िअ	रंगीन पड़ियाम्बर
'अम्दोअ'	'तुमतो'
निरल् दोअम् चलिबलिय	तुम सुन्दर तो चहल पहल करते हो
रंग गमेच	— रंगीन गमछाम्बर
दोल तिअ मोदे तेलं	— चलो न दोनों साथ चलें
रंग पड़िअ	रंगीन पड़ियाम्बर
'अम्दोअ'	तुमतो'
मरे तिअ मिस तेलं	— चलो न दोनों साथ चलें
रंग गमेच	रंगीन गमछाम्बर
तरे नरे नरे न	— तरे नरे नरे न
तरे नरे न	तरे नरे न
'नरेगोन'	— 'नरेगोन'
तरे नरे नरे न	तरे नरे नरे न
तरे नरे न	— तरे नरे न

❋

बुरु चेतन् रेन् ए चितिरि — पहाड़ के ऊपर के हे तितिर

बुरु चेतन् रेन् ए चितिरि	— पहाड़ के ऊपर के हे तितिर
एल चितिरि हड़गुन् में	तितिर आओ उतर आओ
नर लतर् रेन् ए असकल्	घाटी के नीचे के हे असकल
एल असकल नोसोरेन् मे	असकल, आओ ऊपर आओ
बा सुब रेञ् एसेकर कन्	— फूल की छा में मैं अकेला हूं
एल चितिरि हड़गुन् मे	तितिर आओ उतर आओ
डलि सुब रेञ् डलेकलेअ कन्	डाली की छा में मैं बेचैन हूं
एल असकल् नोसोरेन् मे	— असकल् आओ ऊपर आओ

बा होल गुतु संगि ले	— एक साथ हम फूल गुंथ लें
एल चितिरि हड़गुन मे	— तितिर आओ उतर आओ
डलि होलं गलं संगि ले	एक साथ हम पल्लव मेढ़ लें
एल असकल नोसोरेन् में	— असकल आओ ऊपर आओ
बा हिसिर लं बपदल ले	— हम फूल माला बदल लें
एल चितिरि हड़गुन् मे	तितिर आओ उतर आओ
डलि माला लं उपुदल ले	पल्लव माला उदल ले
एल असकल् नोसोरेन् मे	— असकल आओ ऊपर आओ

❋

अपे हतु अकड़ रे — तेरे गाँव के अखाड़ा में

अपे हतु अकड़ रे	— तेरे गाँव के अखाड़ा में
डुलकि नगर सड़िलो: रे	ढोल नगाड़ा बजते ही
अले हतुइ: चलि बलि	हमारा गाँव चहल पहल होता
लन्द जगर जारु बेड़:	हँस बोल दल बनाता फिरता
गतिकोस: सोंगो बेड़:	दोस्तों को संगति करता
दोल सुसुन् मेने लो:ते	— नाचने जाने को कहते
अकेड़ रे सुसुन् रे	— अखाड़ा में नृत्य में
रसिक रे: अदकन	उमं में खो गया है
मिस दुरं मिस रुरं	एक बार गाने में एक बार बजाने में
चएल रे: डोबेअ कन	छेला में आनन्द विभोर है
अकड़ अतोम् रे दूब्दिरि रे	किनारे बैठने की पत्थर पर
हिसिड़िसिसिकिड़ि रे: बुल कन	— मजाक करते मस्त में डूबा है
अपे हतु अकेड़ रे	तेरे गांव के अखाड़ा में
सुसुन कड़ि टुन्डु जन् रे	नाच की कड़ि टूट जाने पर
हतु सि: सोणोए जन् रे	गाँव में सनाटा छा जाने पर
दुरं सड़ अतेनन् मे	तुम गीत सुनना
तंगि होरए: दरु सुबरे	तुम्हें इन्तजार करेगा वृक्ष की छा में
बोतोई मे एनत:इ रे	— डरवाना उसे वहीं पर

❋

दरु उम्बुल् रे

लिदि-लिदि दरु उम्बुल् रे
मोदे रेलं इनु केन्
तड़े तसे दरु कोतो रे
मिस तेलं खेलड़िकेन्

तोलेन् जनम् ससं सुतम्
बगे जन दरु उम्बुल्
टिकन् जनम् किअसिन्दुरि
रड़ जन दरु कोतो

बगे जन दरु उम्बुल्
निद सिंगिञ् उड़ुःमेअ
रड़ जन दरु कोतो दो
दुड़म् निदञ् कुगु मेअं

वृक्ष की छा में

— झबराये वृक्ष की छा में
हम साथ.साथ खेले थे
लतराये वृक्ष की डाली पर
— हम साथ-साथ झूले थे

— तुम हल्दी धागा बांध ली
बिछुड़ गया वृक्ष की छा
तुम सिन्दूर टीका ले ली
— छुट गया वृक्ष की डाली

— बिछुड़ गया वृक्ष की छा
मैं तुम्हें दिन.रात याद करता
छुट गया वृक्ष की डाली
— मैं तुम्हें राम में स्वप्न में देखता

दोलं गतिञ् बा गुतुते

हकन् चण्डुः मुलुः लेन्
गोलन्चि बा अल लेन्
ओरे ! गतिञ् रे
दोलं गतिञ् बा गुतुते

महादेव पार्वती
बालिलं विन्तिलि
ओरे ! गतिञ् रे
दोलं गतिञ् बा गुतुते

तोअ तेलं डेबेल् लि
सिन्दुरि तेलं टिकलि
ओरे ! गतिञ् रे
बालिलं तोप गिड़िलि

चलो रि सखी फूल गुँथने

— मण्डा मास पहुंच आया
गोलइची फूल खिल उठे
अरे ! प्रिया
— चलो रि साखी हम फूल गुथेंगे

— महादेव पार्वती (को)
फूल हम पहना लें विन्ती कर लें
अरे ! प्रिया
— चलो रि साखी हम फूल गुथेंगे

— हम उसे दूध से नहला लें
सिंदुर का टीका देकर
अरे ! प्रिया
— हम फूल पहना दें उसे तोप दें

बइसक् दुतिअ	वैशाख द्वितीय
हकन् चन्ड: मुलु: लेन्	— मण्डा चाँद निकल गया
बगति को बोलो जन्	भक्ता घूस गये हैं
एल हो	हे हो
डडगुड़ डंक सड़ि तन्	— डडगुड ढाँक बज रहा है
बमणे: बोंग तन्	— ब्राह्मण पूजा कर रहा है
वगतिको ध्यान तन्	भक्तागण ध्यान् में हैं
एल हो	हे हो
कुड़दुदु गन्ट सड़ि तन्	— कुडुदुदु घन्टा बज रहा है
इसि दुतिअ छो तन:	— आज (बैशाख) द्वितीय जागरण है
गप तिर्तिअ हकन्	कल तृतीय झूलन है
एल हो	हे, हो
सेनलंदो बोंग अगुते	— हम जायेंगे पूजा करने

❀

बाकोगो बगइचा	पुष्प वाटिका
बाकोगो बगइचा	— फूलों के बाटिका में
हटिकुट्टि बा अलकन्	तरह-तरह के फूल खिले हैं
चीनी मिसिरि सुगड़	चीनी मिसरी सुन्दर
सुकुबु हिजु: सेनो: तन्	सुगन्ध आ-जा रहीं है
बा उरुगो उलुइ सुकुइ	— भौरा हिले - डोले
ने बाते हन बा रे	इस फूल से उस फूल में
बाको रसि: चेपे: तन	फूलों का रस लेते हैं
सुझबु ओटं तन्	— खुशबु उड़ रही है
गसित्रो दो बगइ रे	— मेरे प्रिया के अनुपस्थिति में
तंगि तेञ् टटएअकन् रे	मैं प्रतीक्षा से भी थका हूं
जो तञ् दो बुलओ कन्	(फिरभी) जी मेरा लुभाया है
वा सुगड़ सुकुबु सोंगे रे	— सुन्दर पुष्प की खुशबु के संग
एल गतिञ् सोंगेञ् मेरे	— प्रिया, आओ मुझे साथ दो
एल संगञ् गतिञ् मेरे	प्रिया, आओ मुझे राहत दो

बाको बगइचा रे	पुष्प बाटिका में
बाको मिदे सोंगे रे	— फूलों की संगत में

❊

जेटे सिंगि गो हिजु. लेन्	गर्मी का मौसम आया
जेटे सिंगि गो हिजु: लेन्	— गर्मी का मौसम आया
सोबेन् बा को गोसो जन्	सब फूल मुरझा गये
ओरे ! गतिञ् रे	ओह ! प्रिया
एन तेचि अमोम् गोसो जन्	— इसलिए कि तुम मुरझा गई
सिद लेक गो चलि बलि	— पहले की तरह चहल-पहल
जेत रेकञ् लेलेम	मैं तुम्हें कहीं न देखता हूं
ओरे ! गतिञ् रे	ओह ! प्रिया
एन तेचि अमोम् गोसो जन्	—इसलिए कि तुम मुरझा गई
हरि तोअ अटल बा	— हरि - दुधिया गोलइची फूल
निद सिंगि अल कन्	दिन-रात खिले हैं
ओरे ! गतिञ् रे	ओह ! प्रिया
ओको बा नं अमोम् गोसो जन्	— किस फूल के लिए तुम मुरझा गई

❊

रेंग्को रगे	झींगुर की बोल
एंगम् अपुम् ओड़: रे	— तेरे माता-पिता के घर में
हगम् बरेम् दुलड़ रे	तेरे भाई - बहन के प्यार में
ओरे ! रेंगको रगे	तुम झींगुर की तरह
लेक बोलेम् दुरं बेड़ केन्	तुम गाती फिरती थी
बुरु हटिअ पिटि पिड़ि	— मेले-राहों-बाजारों में
अमेतेगे सिगर् लेन्	तुम से सुशोभित था
ओरे ! रेंग् को रगे	तुम, झींगुर की तरह
लेक बोलेम् दुरं बेड़ केन	— तुम गाती फिरती थी
जुड़िन् जनम् पड़िन् जन्	— जब तुम शादी कर ली
ओड़:न् जनम् दुअरे जन्	घर-द्वार कर ली
ओरे ! रेंगको अदेन्	तुम, झींगुर की बिलीन
लेक बोलेम् अदे गिड़ि जन्	— सी तुम भी विलीन हो गई

❊

बपगे

जेटे सिंगि कले कल्
ओटे लोलो बले बल्
ओरे ! गतिञ् बपगे
दुकु तेदो जीतञ् लोतन
जेटे तेओ लोलो ते
उङ: तेओ पिकिर् ते
ओरे ! गतिञ् बपगे
दुकु तेदो जीतञ् लोतन्
सिर्मय संगिले सिर्ञ् टन्डु
ओतेञ् तिरुबे ओतेओ टोके
ओरे ! गतिञ् बपगे
दुकु तेदो जीतञ् लोतन
बिर बुरु लो तन् रे
सोबेन को लेले रे
ओरे ! गतिञ, बपगे
दुकु जीरे ओकोए लेलमे

विरह

— ग्रीष्म ऋतु की कल-कल धूप
धरती की ताप और पसीना
ओह ! प्रिया की बिरह
— दु:ख से मेरे प्राण जल रहे हैं
— धूप से भी गर्मी से
चिन्ता से भी फिकर से
ओह ! प्रिया की बिरह
— दु:ख से मेरे प्राण जल रहे हैं
— आकाश देखता हूं आकाश अन्त
धरती झाँकता हूं धरती शुन्य
ओह ! प्रिया की बिरह
— दु:ख से मेरे प्राण जल रहे हैं
— जंगल पहाड़ में आग लगे
उसे सभी देख पाते हैं
ओह ! प्रिया की बिरह
— दु;ख प्राण में कौन देख पायेगा

❋

उयु: द: दो तेब: लेन्

उयु: द:दो तेब: लेन्
जमे जमे: गम लेद्
ओरे ! ददय
ओते अड़ि लुमे जनदो
सिअलं चलुय
हित जंलं हेरेअ
ओरे ! ददय
खेति बरि रे कलं तयोमे
हितरे निन्दिर् गोयो: रनु
सर सुफला यूरिया सल्फेट चूना
ओरे ! ददय
मेस लेरे मुर: होब तन.

वर्षा ऋतु आई

— वर्षा ऋतु आई
झम झम पानी वर्षा
भाई
— खेत - टाँड़ भींग गया है
— हम जोतेंगे - कोड़ेंगे
(उसमें) बीज बोयेंगे
भाई
— खेत बारी में हम पीछे नहीं करेंगे
— बीज में एल्ड्रीन
खाद सुफला यूरिया सल्फेट चूना
भाई
— मिलाने से जादा उपजने लगा है

❋

शिवशंकर भगवान

जेटे सिंगि कले कल्
ओते लोलो बलेबल
एल शिवशंकर भगवान
शिवशंकर भगवान
जी रड़ेः दः गम तम्
रेंगेः तेतं अदे तम्

जय जगरनाथ काशी विश्वनाथ
दरसनले अमः सरम्
एल शिवशंकर भगवान
शिवशंकर भगवान
वृन्दा बिरः रसो रुड़तम्
रसिक रुतु बलेतम्

ओते सिर्म अमः सिरिज
बा तोअदः अमः लुतुम्ते
एल शिव शंकर भगवान
शिव शंकर भगवान
ओते रे जो बाते पेरेः तम्
रामः रइजि रुअड़ तम्

शिवशंकर भगवान

— गर्मी का कल-कल धूप
धरती की ताप और पसीना
हे शिवशंकर भगवान
शिवशंकर भगवान
वर्षा कर राहत दे दो
— भूख प्यास मिटा दो

— जय जगरनाथ काशी विश्वनाथ
हम दर्शक तेरे आश्रम का
हे शिवशंकर भगवान
शिवशंकर भगवान
वृन्दा वन का रस लौटा दो
— रसिक बाँसी बना दो

— धरती आशमा तेरा सृष्टि
दूध फूल पानी तेरे नाम से
हे शिवशंकर भगवान
शिवशंकर भगवान
धरती में फूल-फल भर दो
—राम का राज्य वापस कर दो

ओ सिर्म रेन् सिम्बोंग

ओ सिर्म रेन् सिम्बोंग
जोनोम् किःञम् ओते रे
सेतः अमुबेञ् देअन् म
दुकु रे दयाञ् मे-दयाञ् मे
सोबेन् गड़ि तइन्मे प्रभु
अञ् सोंगे रे

अमगे सिंगि अम्गे चन्डुः
अम्गे ओते रिम्बिल् इपिल्
सेतः अयुबेञ् देअन् म

आशमान के प्रभु

— हे आशमान के प्रभू
तूने मुझे धरती में जन्म दिया
मैं सुबह शाम तेरा ध्यान करुँगा
दुःख में मुझे दया करो-दया करो
हर पल तू रहना प्रभु
— मेरे साथ में

— तू ही सूर्य तू ही चन्द्र
तू ही धरती तू ही आसमा-तारे
मैं सुबह शाम तेरा ध्यान करुँगा

दुकु रे दयाञ् मे-दयाञ् मे
सोबेन् गड़ि तइन् मे प्रभु
अञ् सोंगे रे

अमः नुतुम् सोबेन् तःरे
नेतः हेतः दुकु-सुकु रे
अम् करे कोतः ने संसार
दुकु रे दयाञ् मे-दयाञ् मे
जेतन् गड़ि अलो प्रभुम्
देअ बगिञ

मुझे दुःख में दया करो-दया करो
हर पल तू रहना प्रभु
— मेरे साथ में

— सर्वत्र तेरा वर्तमान
यहाँ-वहाँ दुःख-सुख में
तेरे बिना यह संसार कहाँ
मुझे दुःख में दया करो-दया करो
मुझे कोई भी पल प्रभु
— छोड़ मत देना

भोगोमन्

भोगोमन्-भोगोमन्
ओकोरिञ भोगोमन्
करेः लेलोग

हतु-हतु दिसुम्-दिसुमेञ्
दण केन
करेः लेलोग
ओते रेचि सिर्म रि

बुरु रेचि गड़ रि
करेः लेलोग
हतु-हतु दिसुम् दिसुमेञ्
दण केन
करेः लेलोग

जयर-सरना मंदिर
दण केनञ् कोन कुचि
करेः लेलोग

हतु-हतु दिसुम्-दिसुमेञ्
दण केन
करेः लेलोग

सरना रे क मन्दिर रे
बुरु रे क गड़ रे

ईश्वर

— ईश्वर-ईश्वर
ईश्वर कहां है
दिखाई नहीं दिया

मैंने गाँव-गाँव देश-देश
ढूंढ़ा
दिखाई नहीं दिया
— धरती में है या आकाश में है

— पर्वत में है या नदी में
दिखाई नहीं दिया
मैं गांव-गाँव देश-देश
ढूंढ़ा
— दिखाई नहीं दिया

— जयर-सरना मंदिर
मैंने कोना-कोना छाना
दिखाई नहीं दिया

मैंने गांव-गाँव देश-देश
ढूंढ़ा
— दिखाई नहीं दिया

— सरना में नहीं मन्दिर में
पर्वत में नहीं नदी में

करे: लेलोग	दिखाई नहीं दिया
भोगोमन् दो सोबेन् त:रे	ईश्वर सर्वव्यापी
मेन:इअ	वर्तमान है
करे: लेलोग	— दिखाई नहीं देता

❊

होड़ोनं	**मनुष्य के लिए**
जेटे गर्गि कोअसि	— गर्मी, वर्षा-कुहासा
रबं रतं दुदुगर्	जाड़ा, वर्फ, तुफान
'सम्बड़ओ' बइअ कनो: होड़ोनं	'अनुकुल' बना रहे मनुष्य के लिए
मनोअ सिम्बोंग नेबु बिन्तिलि	—मानव ईश्वर से हम यही विनती करलें
जोनोम् गोनोए: दुकु	-- जन्म मरण और दु:ख
सुकु सनं हेअर्ति	सुख-चाह-ईर्ष्या
'सम्बड़ओ' बइअ कनो: होड़ोनं	'अनुकुल' बना रहे मनुष्य के लिए
मनोअ सिम्बोंग नेब्रु बिन्ति लि	—मानव ईश्वर से हम यही विनती करलें
जो-बा ओते रे	– फल-फूल धरती में
जोम् जोपोम् रकम्	खाने-पीने का अनेक
'सम्बड़ओ' बइअ कनो: होड़ोनं	'अनूकुल' बना रहे मनुष्य के लिये
मनोअ सिम्बोंग नेबु बिन्ति लि	मानव ईश्वर से हम यही विनती करलें
दपल् गोपोए एपेरं	— मार-पीट और झगड़े
रे: रेपे: सेपेगेद्	लूट-लूटमार-आपसी भेद
'सम्बड़ओ' बइअ कनो: होड़ोनं	'अनुकुल' बना रहे मनुष्य के लिये
मनोअ सिमबोंग नेबु बिन्ति लि	मानव ईश्वर से हम यही विनती करलें
बिर् जनवर जान्तु	— जंगली जानवर - जन्तु
कुल बिं बिसि	बाघ - साँप बिस
'सम्बड़ओ' बइअ कनो: होड़ो नं	'अनुकुल' बना रहे मनुष्य के लिये
मनोअ सिमबोंग नेबु बिन्ति लि	मानव ईश्वर से हम यही विनती करलें
बुरु-इकिर सरना	— महादेव पारवती और सरना
जयर अर् देसाली	जयर और देसौली
कबु रिड़ि कोअ ओते रे	इन्हें हम धरती में नहीं भूलेंगे
मनोअ सिम्बोंग नेबु विनति लि	— मानव ईश्वर से हम यही विनती करलें

❊

करम् राजा

ओ विधि करम् राजा
तिंसि अकेड़ को तल रे
कुड़ुम्ब दरु अमः तनः जुम्बड़
जावा बा अमः तनः सुगड़
गोअरि तनले
तमः निरल

सिम्बोंग-बुरु इकिर
ओ सोबेन् जयर् सरना
कुड़ुम्ब दरु अमः तनः जुम्बड़
जावा अमः तनः सुगड़
गोअरि तनले
तमः निरल

ओ अमः हिजुः रे तिसिं
अले रे चिकन् चलि बलि
रेंगे तेतं दुकु उकु जन
सुकु रसिक रले परेः जन
गोअरि तनले
तमः निरल

कर्मा राजा

— ओ विधि करम राजा
आज अखाड़ों के बीच में
करम गाछ (डाली) झबरा तू ही है
जावा फूल तेरी सुन्दरता है
हम नत्मस्तक हैं
तेरे पवित्रता के समक्ष

— धरती माता बुरु (शिव) इकिर(दुर्गा)
हे सब जयर-सरना
करम गाछ (डाली) झबरा तू ही है
जावा फूल तेरी सुन्दरता है
हम नत्मस्तक हैं
तेरे पवित्रता के समक्ष

— हे आज तेरे आगमन में
हम में क्या चहल-पहल है
भूख-प्यास दुःख मिटे
सुख आनन्द रस भर आये
हम नत् मस्तक हैं
— तेरे पवित्रता के समक्ष

❁

करम् कटब्

ओ विधि करम् बोंगा
ओ विधि करम् राजा
हग मिसि करम् कटब तन लिं
अमः सति बगति रे

मद् बिति नव डलि रे
सारु सकम् हनरुब्
अन डलि किन् बा अल जन
अमः सति बगति रे

नव ब-ब रेअः तबेन्
अर् सोरगो गइअः ताअ

करमा उपासना

— हे विधि करम देव
हे विधि करम राजा
हमभाई-बहन करम (तेरी)
— तेरे सत्य की भक्ति में

— बांस की नई डालियाँ में
सारु पत्ता का ढक्कन
इन डालियों पर फूल खिल उठे
— तेरे सत्य की भक्ति में

— नई धान का चूड़ा
और स्वर्ग गाय की दूध

तोअ तबेन् दुल् दोड़ोम ज:मलि	दूध - चूड़ा ढाल - चढ़ा रहे हैं
अम: सति बगति रे	— तेरे सत्य की भक्ति में

※

गंगा जमुना	गंगा यमुना
सिद दोम् तइकेन	— पहले तू था
सिरि वृन्दा बिर् रे	श्री बृन्दा वन में
ओरे-हायरे, करम् राजा	ओह रे ! हाय रे ! करम राजा
सेनो: तनम् गंगा जमुना	— (अब) तू गंगा यमुना जा रहे हो
चिम्निं रसिक ते	— कितने उमंगों के साथ
हिजु: लेनम् अले लो:ते	तुम हमारे साथ आया था
ओरे हाय रे, करम् राजा	ओह रे ! हाय रे ! करम राजा
सेनो: तनम् गंगा जमुना	(अब) तुम गंगा यमुना जा रहे हो
कले ओम:म् तोअ मन्डि	— 'हम तुम्हें दूध भोज नहीं दिये
जो तमो गोसो जन्	(इसीसे) तू मुर्झा गया
ओरे हायरे करम राजा	ओह रे ! हाय रे ! करम राजा
सेनो: तनम् गंगा जमुना	(अब) तुम गंगा यमुना जा रहे हो
एअ समुद्र परोमते	— सात समुद्र के पार से
बिर् मुलिम् रुड़ लेन	तू वन की ओर से लोटा था
ओरे हायरे करम् राजा	ओह रे ! हाय रे ! करम राजा
सेनो: तनम् गंगा जमुना	(अब) तुम गंगा यमुना जा रहे हो

※

अबु दिसुम् भारत रे	हमारा देश भारत में
अबु दिसुम् भारत रे	— हमारा देश भारत में
सिद सभ्यता हो लेन्	सर्व प्रथम सभ्यता आया था
दुनिया रेन् होड़ो	दुनिया के लोग
सेण इतुन् को हिजु: लेन्	—(यहाँ) ज्ञानार्जन के लिए आते थे
इसु बलए तइ केन	— बड़ा हो कठिन था
ओते अते सेनो: चण्डु:रे	धरती से चाँद पर जाना
ने दिसुम् गे सिद	यही देश ने सर्व प्रथम
सोबेन् सेणए: ओमे लेद्	— सारा ज्ञान बतलाया था

बाओ:क जो:क	— फूले और फले
अयर तेगे: सेनेक	सदा आगे बढ़े
गेलेओ:क सोना	फूटे सोना
ने दिसुम: ओते रे	इस देश की भूमि पर

❀

राम सीता लक्ष्मण — राम-सीता-लक्ष्मण

राम सीता लछुमन्	— राम-सीता-लक्ष्मण
ओको तेको सेनो: तन	सब कहाँ जा रहे हैं
हेलो डेलो	डगमगाते
हेलो डेलो	डगमगाते
तलरे सीताए: सेनकद	बीच में सीता चली हैं
बोरो सोरो	— डरते-डरते
अयर रे रामचोन्द्रो	— आगे रामचन्द्र जी
तयोम रे लछूमन	पीछे लक्ष्मण जी
हेलो डेलो	डगमगाते
हेलो डेलो	डगमगाते
तलरे सीताए: सेनकद	— बीच में सीता चली हैं
बोरोसोरो	— डरते-डरते
बिर् कन्दर बुरु जोल	— वन झाड़ी पर्वत ढाल
सब नकिन् अ:सार	दोनों तीर धनुष लिये
हेलो डेलो	डगमगाते
हेलो डैलो	डगमगाते
तल रे सीताए: सेनकद	— बीच में सीता चली हैं
बोरोसोरो	डरते-डरते

❀

जमुना रे डेबेल् रे — यमुना में स्नान में

जमुना रे डेबेल् रे	— यमुना में स्नान में
डोबेअकनबु रे	हम व्यस्त हैं
हनि: वइ कोदोम् दरुरे	— साखियाँ, देखो कदम पेड़ पर
औकोए दुब कन्	कौन बैठा है

लेल् तनए: हपे रे	— वह चुप देख रहा है
लन्द तनए: मोच रे	मुख में मुस्का रहा है
हनि: बइ कोदोम् दरुरे	साखियां, देखो कदम पेड़ पर
ओकोए दुब कन्	— कौन बैठा है
चिल्कतेञ् लेल् लि:रे	— मैंने कैसे देख ली
रुतुइ: ओरों बनन् रे	बाँसी का बहाना किया
हनि: बइ कोदोम् दरु रे	साखियां, देखा कदम पेड़ पर
ओकोए दुब कन्	कौन बैठा है
अबु जोगओलेदत:रे	— जहाँ हम रखी थीं
किचिरें दो बनो: रें	वस्त्र वहाँ नहीं है
हने: बइ कोदोम् दरु रे	साखियाँ, देखो कदम पेड़ पर
ओकोए हक तद्	कौन टंगा है
होन् रे चेंगोल् मेंगोल् रे	— छोटपन का नटखट में ही हो
क ज:म् रिड़ि तद रे	शायद तुम नहीं भूले हो
किचिरि द ओम लेम् रे	तुम हमें साड़ियाँ दे दो
ओकोए हक तद्	कौन टंगा है

❀

कोदोम् सुब जमुना रे	**कदम वृक्ष के नीचे यमुना में**
कोदोम् सुब जमुना रे	— कदम पेड़ के नीचे यमुना में
गोपिने को ड़ेबेल् तन	गोपिगण स्नान कर रही हैं
डेबेल् इनु रसिक रे	स्नान क्रीड़ा की धुन में
डोबेअकनको रे	— वे डुबे हुए हैं
हपे हपे: हिजु: लेन	— छूप-छूप कर आया था
तीरे रुतु ससं धोति	— हाथ बाँसी पीले वस्त्र
किचिरि दोए: रकब्केद	— वह साड़ियों को चढ़ा दिया
कोदोम् दरु चुटि रे	— कदम पेड़ के चोटि पर
चिल्क तेको लेल् लि:अ	— वे उसे कैसे दिखाई दिया
उकुनेदोको दनंएन्	सब (शर्म से) लुक छिप रही हैं
किचिरि दो हक कन	साड़ियाँ टंगा हुआ है
कोदोम् दरु चुटिरे	— कदम वृक्ष की चोटि पर

उरि:गइको गुपि तनि:	— हे गाय चराने वाले
दरु रे दुब कनि:	वृक्ष पर बैठे हुए तुम
ए भाई ससुं धोति	हे भाई पीले धोती
वि.चिरि द ओम लेम्	— हमें साड़ियाँ दे दो
गड़िको चेंगोल् मेंगोल	— बन्दरों की नटखट है
रकब् केदको दरु चुटि	वो चढ़ा दिये वृक्ष के ऊपर
ए भाई ससं धोति	हे भाई पीला धोति
किचिरि द ओम लेम्	— हमें वस्त्र दे दो

❀

वृन्दा बिर् कोदोम् त:रे — वृन्दा वन के कदम तले

वृन्दा बिर् कोदोम् त:रे	— वृन्दा वन के कदम तले
कृष्टो रुतुइ: ओरोंतन	कृष्ण बाँसी बजा रहा है
रुतु तएदो निरल् सड़ितन	उसकी बाँसी सुन्दर बज रही है
सड़ि अयुम् सेनो: मोनेतन	— ध्वनि सुन जान का मन कर रहा है
कोदोम् दरु बंकदड़ए	— कदम पेड़ की मोड़दार डालियाँ
दुबकनए: लंकड़ए;रे	— वह मोड़ पर बैठा है
रुतु तएदो निरल् सड़ितन	— उसकी बाँसी सुन्दर बज रही है
सड़ि अयुम् सेनो: मोने तन	— ध्वनि सुन जाने का मन कर रहा है
हेन्दे-हेन्दे ससं चएल	— काले-काले पीले छैला
उरि: कोगे: गुपि तन	गायों को चरा रहा है
रुतु तएदो निरल् सड़ितन	उसकी बाँसी सुन्दर बज रही है
सड़ि अयुम् सेनो: मोनेतन	— ध्वनि सुन जाने का मन कर रहा है

❀

धरती रे सोबेन कोते — धरती में सबों से

धरती रे सोबेन कोते	— धरती में सबों से
होड़ो सेणते: चेतन् जन	— मनुष्य ज्ञान से श्रेष्ठ हुआ
अपिर् तनए: अपिर्	उड़ रहा है-उड़ रहा है
ओते अते सिर्मरे चण्ड:रेओ	— धरती से आकाश में चाँद पर भी
समुद्ररे हइ लेक	— समुद्र में मत्स्य की भांति
सिर्मरे दिदि लेक	आकाश में गीध की भांति

अपिर् तनएः अपिर् तन	उड़ रहा है—उड़ रहा है
ओते अते सिर्मरे चण्डुःरेओ	— धरती से आकाश में चाँद पर भी
भोगोमनोएः दन्द जन	— ईश्वर भी आश्चर्य है
डट रे कटुइः हुअग कद	— दाँतो तले उँगली दबाये
नमिन् सेण-नमिन् सेण	इतना ज्ञान-इतना ज्ञान
जीरेकञ् टोर् लेद मनोअरे	— मैंने सोचा नहीं था मनुष्य में

❀

चण्डुः परोम्	**चाँद के पार**
ने सोमए दो कले जुग्	— यह युग कल युग
चण्डुः जोपेरे जनएः भारत	भारत, अब चाँद समीप का हुआ
सिद अलं गेलं अयर् लेद	सर्व प्रथम आगे हम [illegible]
सिद अलंगेलं अपन् लिःअ	सर्व प्रथम उसे हम अपना [illegible]
दोलं सेनोगलं चन्डुःपरोम्	— अब हम चलो चलें चाँद के पार
रिम्बिल् जपः इपिल् कोलोः	— आकाश के नजदीक तारों के साथ
जारु अऊअलंए भारत	भारत, हम बातें कर [illegible]
सिद अलंगेलं दोल दुतम	सर्व प्रथम आगे हम [illegible]
सिद अलंगेलं दोल दखले	सर्व प्रथम हम ही अपना लें
दोलं सेनोगलं चन्डुः परोम्	— अब हम चलो चलें चाँद के पार
निद सिंगिरे बनोः मुन्डि	— दिन-रात में [illegible]
निंद-सिंगि मिदेमे भारत	दिन-रात एक [illegible]
दण दतम् गे नेजुगुरः मोने	खोज ही इस युग की चाह है
सोबेन् कोते अयरेन्रः सनं	— सबसे सदा आगे रहने की चाह
दोलं सेनोगलं चण्डुः परोम्	अब हम चलो चलें चाँद के पार
इतुअनबु सोबेन् को	हम सब को ज्ञान है
जेतए कबु तइन ए भारत	भारत, हम कोई नहीं रहेंगे
नेअ होड़ो कको उडुःइ जेतुए	मनुष्य यह नहीं सोचता है
उडुः तनको सोबेनतेञ् अयरोः	सोचता है मैं सदा आगे रहूँ
दोलं सेनोगलं चण्डुः परोम्	हम चलो चलें चांद के पार

❀

भारत एंगए: कजितन

भारत एंगए: कजितन
दरु रोअ बिर् रुअड़एम्
बिर् कन्दर् अलो तबुमगो:
गमए: अगुइअ बुरु बिरदरु

बिसि होयोसिब् केते
जी होयोए: ओमेअ
बिर् कन्दर् अलो तबु मगो:
गमए: अगुइअ बुरु बिर दरु

सोबेन् कोनं दः जी
गमए नंगेन बिर् होनं
बिर् कन्दर अलोतबु मगो:
गमए अगुइअ बुरु बिर् दरु

छोटानागपुर बिर् दिसुम्
उजड़ तन बिर् कन्दर
निद-सिंगि दरु मगो तन
लेल् तनि: लेल् हपे तन

राजस्थान रोड़ो दिसुम
उजड़ जन्ते कए: गमए
एन्क अलो बयु:तब दिसुम्
भारत तबु खेती बति दिसुम्

भारत माँ की पुकार

— भारत माता बोल रही है
पेड़ लगाओ, वन फिर लाओ
मत कटे जंगल-झाड़ हमारा
— पर्वत-वन-वृक्ष वर्षा लाता है

— कार्बनडाइ आॅक्साइड ग्रहण कर
आॅक्सीजन देती है
मत कटे जंगल-झाड़ हमारा
— पर्वत-वन-वृक्ष वर्षा लाता है

— सब (प्राणी) के लिए प्राण
वर्षा के लिये वन चाहिये
मत कटे जंगल-झाड़ हमारा
— पर्वत-वन-वृक्ष वर्षा लाता है

— छोटानागपुर वन प्रदेश
जगल झाड़ उजाड़ रहा है
दिन-रात वृक्ष कटा रहा है
— रक्षक मौन देख रहा है

— राजस्थान रेगिस्तान प्रदेश
उजड़ने के बाद नहीं बरसता
न बने वैसा देश हमारा
— भारत कृषि प्रधान देश हमारा

❋

लन्द बेड़ तन्गेम लेलोग

एंगम् अपुम् ओड़: रे
सुकु सुगड़ रेम रे
जेतन् उड़:पिकिर् बनो:
लन्द बेड़ तन् गेम् लेलोग

पीटि पिड़ि हटिअ
गतिको लेल् होरम

तुम हँसते फिरते दिखता हो

— माता-पिता के घर में
तुम सुख और प्यार में हो
कोई चिन्ता-फिकर नहीं है
— तुम हँसते फिरते दिखती हो

— बाजार के बाहर और राहों में
साखियाँ तेरा प्रतीक्षा करते हैं

जेतन् उड़: पिकिर् बनो: — कोई चिन्ता फिकर नहीं है
लन्द बेड़ तन् गेम् लेलोग — तुम हँसते फिरते दिखती हो

सुपिद् चेतन् अटल् बा — खोपा पर अटल फूल
बासड़ि ओरे तन् — फूलदार साड़ी सरक रहा है
जेतन् उड़: पिकिर् बनो: — कोई चिन्ता फिकर नहीं है
लन्द बेड़ तन् गेम् लेलोग — तुम हँसते फिरते दिखती हो

आड़:न् जन् रेम् दुअर जन्रे — घर हो जाने पर, द्वार हो जाने पर
जुड़िन् जन् रेम पड़िन् जन्रे — शादी हो जाने से, विवाह हो जाने से
जीरे उड़ पिकिर बोलोअ — मन में चिन्ता फिकर आती है
निद सिंगि मेद्द: जोरोअ — दिन-रात आँसू गिरते हैं

अम् उरि: गुपि रे — तुम गाय चराओ गे तो

अम् उरि:गुपि रे — तुम गाय चराओ गे तो
अञ्ओ उरि: ञ् गुपिअ — मैं भी गाय चराऊँगा
बिर् तेलं हो कोअ — हम दोनों बन ले जायेंगे
मोदे रेलं गुपि कोअ — एक साथ चरायेंगे

दुब कनो: लं उम्बुल्रे — हम दोनों छाया में बैठे रहेंगे
लन्द जगर् दुनि रे — हँसी मजाक की धून में
बिर् तेलं हरे कोअ — हम वन ले जायेंगे
मोदे रेलं गुपि कोअ — एक साथ चरायेंगे

अम् रूतु ओरों रे — तुम बाँसी बजाओगे तो
तोअ बात्र् गतुअ — मैं दुधिया फूल माला बनाऊँगी
बिर् तेलं हरे कोअ — हम वन ले जायेंगे
मोदे रेलं गुपि कोअ — एक साथ चरायेंगे

अम् गति हम्बु दिञ्रे — तुम मुझे अपनी बाँहो में लेओगे
बा मालात्र् हकम — मैं माला हार दूँगी
बिर् तेलं हरे कोअ — हम वन ले जायेंगे
मोदे रेलं गुपि कोअ — एक साथ चरायेंगे

अम् लन्द जगर् रे — तुम हँसोगे-बोलोगे तब
अञ्ओञ् लन्द जगर — मैं भी हँसुगी-बोलूँगी
बिर् तेलं हरे कोअ — हम वन ले जायेंगे

मोदे रेलं गुपि कोअ	—	एक साथ चरायेंगे
अम् जं चिकओ: रे	—	तुम कुछ होने से
अञओञ् जं चिकओ: रे		मैं भी कुछ हो जाऊँ
बिर् तेलं हरे कोअ		हम वन ले जायेंगे
मोदे रेलं गुपि कोअ	—	एक में चरायेंगे
अम् मेद्द: जोरोए रे	—	तुम आँसू बहाओगे, तो
अञो मेद्द: ञ जोरोय		मैं भी आँसू बहाऊँगी
बिर् वोंगए दया लंअ		हमें वन देवता दया करेगा
अटमट बिर् तल रे	—	घनघोर वन में

❀

हटिअ होर चम्पा		भ्रमण राह का चम्पा
हटिअ होर चम्पा	—	भ्रमण राह का चम्पा
निद सिंगि अल लेन		दिन-रात खिला हुआ है
अन बादो मोगो मोगो सोअन		उस फूल की मन्द-मन्द खुशबू से
निद सिंगि दुड़मो तञ् बनो:	—	दिन-रात मेरी नींद नहीं है
अन बा र: सोअन्	—	उस फूल की सुगन्ध
ओटं जन होयो रे		हवा के साथ चली
अन बादो मोगो मोगो सोअन		उस फूल की मन्द-मन्द खुशबू से
निद सिंगि दुड़मो तञ् बनो:	—	दिन-रात मेरी नींद नहीं है

❀

ने सोमए दो कले जुगु		यह समय कल युग
ने सोमए दो कले जुगु	—	यह समय कल युग है
चण्डु: लेक तुर कन		चाँद की भाँति उदय हुआ है
दुनियाँ रे-दुनियाँ रे		दुनिया में-दुनिया में
अञदो लेल् तेञ् दन्द जनरे	—	मैं देखकर चकित हो गया हूं
दुनियाँ रे -दुनियाँ रे		दुनिया में-दुनिया में
मेणेद् मिसिन् बइ जन		लोहे का मसीन बना
चेणे लेक अपिर तन		पक्षी की तरह उड़ने लगा
दुनियाँ रे-दुनियाँ रे		दुनिया में--दुनिया में
अञदो लेल् तेञ् दन्द जनरे		मैं देखकर चकित हो गया हूं
दुनियाँ रे-दुनियाँ रे	—	दुनिया में-दुनिया में

मनोअ को लेल् लेल् ते — मनुस्य कौ देख-देख कर
भोगोमनोए: दन्द जन — ईश्वर भी चकित हैं
दुनियाँ रे-दुनियाँ रे — दुनिया में-दुनिया में
अञ्दो लेल् तेञ् दन्द जनरे — मैं देखकर चकित हो गया हूं
दुनियाँ रे-दुनियाँ रे — दुनिया में-दुनिया में

❀

जोजो बुरू गेनरे — जोजो पहाड़ की तलहटी में

जोजो बुरू गेन रे — जोजो पहाड़ की तलहटी में
मेरोम् कोञ् गुपिरे — मैं बकरियाँ चराने में
अञ् सलि सुबरे — मैं साली वृक्ष की छा में
अम् चिरेम् दुरं लेद रे — प्रिया, तुम की गाई थी
हम्स दः जोबेल रे — हमसा दः पनघट में

रो: जनञ् जी रे — मेरा दिल धड़का
अम: दुरं अयुम् रे — तेरे गीत सुन कर
अञ् सलि सुबरे — मैं साली वृक्ष की छा में
अम् चिरेम् दुरं लेदरे — प्रिया, तुम की गाई थी
हम्स दः जोबेल रे — हमसा दः पनघट में

हड़गु केनञ् हप रे — मैं चुप उतर आया था
कोएयो: केनञ् दनं रे — छिपकर देखा, मैं हुलक कर
अञ् डोब चेतन् रे — मैं डोभा ऊपर से
जेतए कए: तइ केन रे — प्रिया, कोई नहीं था
हम्स दः जोबेल रे — हमसा दः पनघट पर

अडं लेदञ् दुरं रे — मैंने गीत की आवाज दी
अतेन् लेदञ् सड़ रे — (फिर) मैं आवाज की अन्दाजा की
अञ् डोब चेतन् रे — मैं डोभा के ऊपर से
अम् चिरेम् दुरं लेद रे — प्रिया, तुम की गाई थी
सिसिबा टिकुर रे — सिसिफूल टोंगरी पर

❀

सोना लेकन् करम् चन्डु: — स्वर्ण सी करम चाँद

सोना लेकन् करम् चन्डु:	— सोना जैसा करम मास
मुलु: सेन सोखि रे	हे सखी, आया है
इसु दुकु सुकु तेबु	दु:ख सुख से गुजर कर हम
तेब: नम् तद रे	— इसे पहुंच पाये हैं
ओकोए गोयो: ओकोए जिदो:	— कोई मरने कोई जीने
मेन: बुअ सोखि रे	हे सखी, समक्ष हैं हम
इसु दुकु सुकु तेबु	सुख दु:ख से गुजर कर हम
तेब: नम तद रे	— इसे पहुंच पाये हैं
सुसुनबु करम् म	— हम नाचेंगे-गायेंगे
तइनबु सोखि रे	हे सखी, हम रहेंगे
हिरिति पिरिति रे	प्रेम-प्रीत में
कबु बपगेअ रे	— हम बिछुड़ेंगे नही
सोना लेकन् करम् चन्डु:	— सोने सी करम मास
सेनो: जन् रे सोखि रे	हे सखी, गुजर जाने से
ओड़ो कबु नमेअं	फिर हमें न मिलेगा
करम् सुसुन् रसिक	— करम नृत्य-उमंग

❀

कुम — सपना

तिसिं निदञ् कुमु तन	— आज की रात मैंने सपना देखा
कुद दरू सुब रे	जामून के पेड़ के नीचे
दुब् केअतेञ् लेल् होर तन्	मैं बैठकर इन्तजार कर रहा हूं
तंगि तनञ् सोकि इसु खोनते	— सखी, मैं बड़ी देर से प्रतीक्षा कर रहा हूं
अम् नतेन दोअ कन	— तेरे लिए रखा हुआ है
पान बिड़ि हेड़ेम् मेटइ	पान-बिड़ी रसगुल्ला मिठा
दोअ कन बा उर्मल् रे	फूलदार रूमाल में रखा हुआ है
तंगि तनञ् सोकि इसु खोनते	— सखी, मैं बड़ी देर से प्रतीक्षा कर रहा हूं

एओन् लेनञ् अचकते — अचानक मेरी नींद टुटी
गितिअ कनञ् बारि मैं अकेला ही सोया हूं
अंओ: सिबिल् दुड़ुम् निरे जन् सूबह की सुखद नींद हराम हो गया
तुरे जनए: सोकि एन उडु ते — सखी, इसे सोचते सुर्योदय हो गया

ओको रेको सुसुन् तन — कहाँ नाच हो रहा है

ओको रेको सुसुन् तन — कहाँ नाच हो रहा है
चिमए रेको करम् तन कहाँ करमा हो रहा है
गुड़-गुड़ सड़ि रुम्बुल तन गुड़-गुड़ गुंज रहा है
कुडम् तञ्दो हन्दिड़ि जन — मेरा दिल दहल गया

वृन्दा बिरेको सुसुन् तन — वृन्दा वन में नाच हो रहा है
रासेको बिद कद रास गड़ाया है
गुड़ु गुड़ु सड़ि रूम्बुल् तन गुड़ गुड़ गुंज रहा है
कुड़म् तञ्दो हन्दिड़ि जन — मेरा दिल दहल गया

अकेड़ रेञ् हिजु: लेन — मैं अखाड़ा में आया
दुरं लेदञ् पड़ि रे मैंने पारि में गया
गुड़ु गुड़ु सड़ि रूम्बुल् तन गुड़ गुड़ गुंज रहा है
कुड़म् तञ्दो बुलओ जन — मेरा दिल बहल गया

अपे हतु अकेड़ रे — तुम्हारे गाँव-अखाड़ा में

अपे हतु अकेड़ रे — तुम्हारे गाँव के अखाड़ा में
डुल्कि नगेर सड़ि रे ढोल नगाड़े बजते ही
हिजु:गे मोनेअं, सेटेरे सनंअ आनें का, पहुंचने का मन करता है
मुद अम् करे अकड़ क सिंगरो: — मगर, तेरे बिना अखाड़ा श्रृंगार नहीं होता

अम् गेञ् लेल् होर: — मैं तेरी इन्तजार करता
अकेड़ रे बं मेरे, जब तुम अखाड़ा में नहीं होती
हिजु:गे मोनेअं, सेटेरे सनंअ आने का, पहुंचने का मन करता है
मुद अम् करे अकेड़ क दुरंओ: — मगर,तेरे बिना गीत भी नहीं निकलता
अञ्दो चिअ: गति को — मैं तो क्या मेरे दोस्त भी
अम् क रेको हेअति तेरे बिना बेचैन रहते हैं

हिजु:गे मोनेअं, सेटेरे सनंअ — आने का, पहुंचने का मन करता है
मुद अम् क रे रसिक क उडुंओ: — मगर, तेरे बिना उमं नहीं आता है

❋

डिन्ड सोमए रकब् लेन् — युवा अवस्था आया है

डिन्ड सोमए रकब् लेन् — युवा अवस्था आया है
बा लेक अल लेन् — फूल सा खिला है
डिन्ड चएल मिस गेअ — युवा छैला एक ही बार है
सेनो: जन् रे — गुजर जाने से
क ओड़ो: नमोग — फिर न मिलेगा
डिन्ड चएल मिस गेअ — युवा छैला एक हीं बार है

दिनों: दिनों मएल तन — दिन-दिन मैला रहा है
बा लेक गोसो तन — फूल सा मुरझ रहा है
डिन्ड चएल मिस गेअ — युवा छैला एक ही वार है
सेनो: जन् रे — गुजर जाने पर
क ओड़ो: नमोग — फिर न मिलेगा
डिन्ड चएल मिस गेअ — युवा छैला एक ही बार है

लन्द जगर् गति रे — हँसना-बोलना यारों से
सुसुन् करम् रसिक रे — नाचना-गाना उमगो में
डिन्ड चएल मिस गेअ — युवा छैला एक ही बार है
सेनो: जन् रे — गुजर जाने पर
क ओड़ो. नमोग — फिर न मिलेगा
डिन्ड चएल मिसगेअ — युवा छैला एक ही बार है

ने सोमए सेनो: जन्रे — इस उम्र के गुजर जाने पर
उड़: पिकिर जल रे — चिन्ता फिकर ज्वाला में
डिन्ड चएल मिस गेअ — युवा छैला एक ही बार है
सेनो: जन् रे — गुजर जाने पर
क ओड़ो: नमोग — फिर न मिलेगा
डिन्ड चएल मिस गेअ — युवा छैला एक ही बार है

❋

चिल्कतेञ् परोमेअं गड़	मैं नदी कैसे पार करूँगा
गड़ परोम् कुद सुब	— नदी के पार जामुन पेड़ के नीचे
गतिञ् दोरेः हिअ कन	मेरा प्रिय आया है
ओ होरे ! हाय रे ! हाय रे	ओह रे ! हाय रे ! हाय रे
चिल्कतेञ् परोमेअं गड़	— मैं नदी कैसे पार करूँ
पिरिति बा उसुइ-दुड़ुइ	— प्रीत फूल सुन्दर सी खुशबु
गतिञ् दोरेः अगुअन	मेरा प्रिय ले आया है
ओ होरे ! हाय रे ! हाय रे	ओह रे ! हाय रे ! हाय रे
चिल्कतेञ् परोमेअ गड़	— मैं नदी कैसे पार करूँ
गड़ द दो लिंगि तन	— नदी की पानी बह रही है
उगुल् बुगुल् उबल् कबल्	ऊबल खाबल उछल कचहल
ओ होरे ! हाय रे ! हाय रे	ओह रे ! हाय रे ! हाय रे
चिल्कतेञ् परोमेअं गड़	— मैं नदी कैसे पार करूँ
चेणे रेचञ् अपिर् परोम्	— मैं पक्षी होता तो उड़ कर जाता
डोंग रेचञ् ओयर् परोम्	मैं नाव होता तो तैर कर जाता
ओ होरे ! हाय रे ! हाय रे	ओह रे ! हाय रे ! हाय रे
चल्कतेञ् परोमेअं गड़	— मैं नदी कैसे पार करूँ

अकड़ रे डुल्कि दो	अखाड़ा में ढोल में
अकड़ रे डुल्कि दो	— अखाड़ा में ढोल में
गतिञ् रूइ लेक दो	मेरा दोस्त की बाजा सी
गुड़ुगुड़ुइ रे अएःगे लेकञ् अयुमि	मुझे गुरगुराहट में उसी के समान लगता
अञ्दो चिते कएः दोल किःञ्	— वह मुझे क्यों नहीं चलाया
तयोमनञ् एनते	— मैं पिछवा हूं उसी लिए
अएःगेञ् तंगि तनः ते	(कि) मैं उसी का इन्तजार कर रहा हूं
गुड़ुगुड़ुइ रे अएःगे लेकञ् अयुमि	मुझे गुरगुराहट में उसी के समान लगता
अञ्दो चिते कएः दोल किःञ्	— वह मुझे क्यों नहीं चलाया
कोरेनमिन् अएः करे	— उसके बिना कहाँ इतना

त-लो:अ अकेड़ रे	अखाड़ा में ताल जमता
गुड़गुड़इ रे अए:गे लेकञ् अयुमि	मुझे गुरगुराहट में उसी के समान लगता
अञ्दो चिते कए: दोल कि:ञ्	— वह मुझे क्यों नहीं चलाया
जीरे अलए बलए रे	— मेरा दिल में अकबकी छा गया
सेन चिञ् तंगि रे	मैं जाऊं या प्रतीक्षा कर लूं
गुड़गुड़इ रे अए:गे लेकञ् अयुमि	मुझे गुरगुराहट में उसी के समान लगता
अञ्दो चिते कए: दोल कि:ञ्	— वह मुझे क्यों नहीं चलाया

❀

डिन्ड सोमए तइकेन	कुवांरा अवस्था था
डिन्ड सोमए तइकेन	— कुवारापन था
हिरिति पिरिति रे	प्रेम और प्रीत में
रसिक बा अल लेन	आनन्द के फूल खिले थे
चएल बा ओटं लेन	छैला के पुष्प उड़े थे
ओ चिमिन् सुकु सुगड़	— ओह ! कितना सुख-सुन्दर
डुल्कि दुमं रूतु बनम्	— ढोल-मंदर बाँसो बनम
नन्द जगर सुसुन करम्	हँसना बोलना नाचना-डेगना
रसिक बा अल लेन	आनन्द के फूल खिले थे
चएल बा ओटं लेन	छैला के पुष्प उड़े थे
ओ चिमिन् सुकु सुगड़	— ओह ! कितना सुख-सुन्दर
जुड़िन् जनञ् पड़िजन्	— विवाह हुये शादी हुये
डिन्ड सोमए सेनो: जन्	कुवांरावस्था गुजर गया
रसिक बा गोसो जन	आनन्द के फूल मुरझाये
चएल बा मएल जन	छैला के फूल मैलाया
ओ चिमिन् दुकु उकड़	— ओह ! कितना दु:ख-विपती

❀

गति सोंगोति बपगे जन्रे	दोस्त यार बिछुड़ जाने से
गति सोंगोति बपगे जन् रे	— दोस्त यार बिछुड़ जाने से
मुसिं रेओ नपम	एक दिन मुलाकात होगी

ने जी लो:ते बपगे जन्रे	इस आत्मा से बिछुड़ जाने से
क ओड़ो: नपम	— फिर मुलाकात नहीं होगी
ने जिबोन मेन बइर्	— जब तक तन में जीवन है
सुसुन करम सुकु बइर्	नाचना करना सुख में है
दुकु सुकु जिबोन् तलरे	दु:ख सुख जीवन के बीच
पड़ि-पड़ि हटिअ कन्	— एक के बाद एक बाँटा है
सोबेन् कोबु इतुअन्	— हम सभी जानते हैं
जिबोन् रीति नेक गे	जीवन रीति ही ऐसी है
नें जी लो:ते बपगे जन्रे	इस आत्मा से बिछुड़ जाने से
सोबेन् कोलो:म् बपगे	— सबसे (संसार) से बिछुड़ जाना है

❀

धरती रे तइनो: मेनते — धरती में रहने के लिए

धरती रे तइनो: मेन्ते	— धरती में रहने के लिए
ने जिबोन् अबुत:रे	यह प्राण हम में
ओरे ! हायरे ! ओको मुसिं	ओह ! हाय ! किसी एक दिन
सतप्ते सतप्ते जिबोन् सेनरे	— तड़प-तड़प कर चला जायगा
लन्द जगर् जिदन् बारि	— हँसना बोलना जिन्दा भर
टक-सिक ओड़: दुअर	रुपया-पैसा और घर द्वार
ओरे ! हायरे ! जीउड़् जन्रे	ओह ! हाय ! मर जाने से
सम इपए: होड़ोमो	— बिलकुल खाली बदन
कमि अबु सोना लेक	— हमें महान् कार्य करना चाहिए
तइनबु रुपा लेक	हमें सुचरित्र बनना चाहिए
ओरे ! हायरे ! जिदन् होररे	ओह ! हाय ! जीवन की राह में
तइनबु इतिहास रे	— हम रहें इतिहास के पन्नों में

❀

र: लो:ते: सेनोग — रोते हुए जायेगा

सोना लेकन् ओते रे	— सोने सी धरती पर
मनोअ जोनोम् होब लेन्	मनुस्य का जन्म हुआ है

र: लो:ते: हिजु: लेन	रोते हुए आया है
र: लो:ते: सेनोग	— रोते हुए जायेगा
मुसि नगेन् ओते रे	— एक दिन के लिए धरती पर
लन्द-जगर गति रे	हँसना-बोलना संगत में
र: लो:ते: हिजु: लेन	रोते हुए आया है
र: लो:ते: सेनोग	— रोते हुए जायेगा
हिजु: सेनो: होर रे	— आने जाने की राह में
लुतुम् तइन पहम्रे	नाम रहेगा स्मृति में
र: लो:ते: हिजु: लेन	रोते हुए आया है
र: लो:ते: सेनोग	— रोते हुए जायेगा

❋

ओकोए होनं रुड़ तञ्रे	**यदि कोई मुझे लौटा दे**
ओकोए होनं रूड़ तञ् रे	— यदि कोई मुझे लौटा दे
सिद रेअ: डिन्ड सोमए	पहले का युवा अवस्था
बुरु पि'टि सुसुन् अकेड़	मेले-बाजार-नृत्याखाड़ा
सिंगरेअञ हतु अटिअ	— मैं शृंगार करूँगा ग्राम-राह
ओकोए होनं रूड़ तञ् रे	— यदि कोई मुझे लौटा दे
सिद सुगड़ रसिक सोमए	पहला सुन्दर रसिक अवस्था
बुरु पि'टि सुसुन्अकेड़	मेले-बाजार-नृत्याखाड़ा
अंदोड़ोयञ् हतु हटिअ	— मैं गुंज भरूंगा गाँव-बाहर
ओकोए होनं रुड़ तञ्रे	— यदि कोई मुझे लौटा दे
सिद दुलड़ सोंगोतिञ्	पूर्व प्रिय संगति मेरे
बुरु पि,टि सुसुन् अकेड़	मेले बाजार नृत्याखाड़ा
होनोरलि हतु हटिअ	— मैं साथ टहलेंगे गाँव बाहर
ओकोए होनं रुड़तञ्रे	— यदि कोई मुझे लौटा दे
सिद लेक एंगञ् अपुञ्	पूर्व जैसे माता पिता मेरे
बुरु पि'टि सुसुन् अकेड़	मेले बाजार नृत्याखाड़ा
लन्द बेड़यञ् हतु हटिअ	— मैं हँस फिरुंगा गाँव बाहर
सोमए नेकए: बएमन:	समय ऐसा धोखा है
सिद रे कञ् टोर् लेद	पहले मैं समझ न पाया

बुरु पि'टि सुसुन् अकेड़ — मेले-बाजार नृत्याखाड़ा
उजड़ जन हतु हटिअ — बिछुड़ गया गांव-राह

ओको स:ते: होयो लेद — किधर की हवा चली

ओको स:ते होयो लेद — किधर की हवा चली
निल् रिम्बिले: हेन्दे लेद — नीलाकाश काला किया
द: दोए: झमे झमेअ — पानी झम-झम बरस रहा है
जी दोए: रामे-रामेअ — जी राम-राम करता है
ओह रे ! — ओह !
नमिन् बिपोति रे कोरिञ — मैं इतना विपत्ति में कहां हूं

हिचिर् बिजिरे टड़रड़ — बिजली चमके ठड़राड़ाए
मेद् दो अरिद् जपिदो:अ — आँख खोलते बन्द होते
द: दोए झमे-झमेअ — पानी झम-झम कर रहा है
जी दोए रामे-रामेअ — जी राम-राम करता है
ओ रे ! — ओह !
नमिन् विपोति रे कोरिञ — मैं इतना विपत्ति में कहां हूं

विर् दरु दोड़ए लेक — वन वृक्ष दहने जैसा
होयो तन होर्सलि लेक — हवा है तूफान की तरह
द: दोए: झमे झमेअ — पानी झम झम कर रहा है
जी दोए: रामे रामेअ — जी राम-राम कर रहा है
ओह रे ! — ओह !
नमिन् विपोति रे कोरिञ — मैं इतना विपत्ति में कहां हूं

उरि: मेरोम् कोते-कोते — गाय-बकरियाँ किधर किधर
बिर् रटि अद् जन — वन तक खो गया
द: दोए: झमे झमेअ — पानी झम-झम कर रहा है
जी दोए: रामे रामेअ — जी राम-राम करता है
ओह रे ! — ओह !
नमिन् विपोति रे कोरिञ — मैं इतना विपत्ति में कहां हूं

चतोम् रेओ कञ् सुरु: — मैं छतरी में भी न बचा
लुम् तनञ सूरु सूट

द: दोए: झमे झमेअ	पानी झम झम कर रहा है
जी दोए: रामे रामेअ	जी राम-राम कर रहा है
ओह् रे !	ओह् !
नमिन् विपोति रे कोरिञ	— मैं इतना विपत्ति में कहां हूं
पिड़ि कुटुणि पेरे: जन	— टाँड़-जमीन सारे भर गये
गड़ लेक लिंगि तन	नदी की तरह् बहने लगी
द: दोए: झमे झमेअ	पानी झम-झम कर रहा है
जी दोए: रामे रामेअ	जी राम-राम कर रहा है
ओह् रे !	ओह् !
नमिन् विपोति रे कोरिञ	— मैं इतना विपत्ति में कहां हूं
बिर् वितर् टुकु कोच	— वन बीच टोले की गुफा
हेपद कनञ् कुच मुच	मैं छिपा हूं कुचमुचाये
द: दोए झमे झमेअ	पानी झम झम कर रहा है
जी दोए रामे रामेअ	जी राम-राम कर रहा है
ओह् रे !	ओह् !
नमिन् विपोति रे कोरिञ	— मैं इतना विपत्ति में कहां हूं

❋

बोलो केनञ् बागइचा	**मैं वाटिका प्रवेश किया**
बोलो केनञ् बागइचा	— मैं वाटिका प्रवेश किया
हटि कुटि बा अलकन्	तरह-तरह के फूल खिले हैं
बा लेल्ते-बा लेल्ते	फूल देख कर-फूल देखकर
हुरुम् सुकु जीतञे: जलतिए जन्	मधुमक्खी मेरा मन मंडराया
नेअ बाते हन बा	— इस फूल से उस फूल पर
चले बेड़नमं-म	बैठ रहा है गुनगुना रहा है
बा लेल्ते-बा लेल्ते	फूल देखकर-फूल देख कर
हुरूमसुकु जीतञे: जुमंबेड़न् जन्	— मधुमक्खी मेरा मन मंडराया
चीनी मिसिरि बा सोअन्	— चीनो मिसरी फूल की खुशबू
रसि चेपे: चक तन्	रस चूस-चाख रहा है
बा लेल्ते-बा लेल्ते	फूल देखकर फूल देख कर
हुरुम्सुकु जीतञे: बलुगिड़ि जन्	— मेरा मन मधुमक्खी पागल है

❋

किसण दिसुम् छोटानागपुर	धनी प्रदेश छोटानागपुर
छोटानागपुर बिर् दिसुम्	— छोटानागपुर वन प्रदेश
चिसुगड़ चिनिरल्	कितना सुन्दर कितना निराला
बिर् बुरु दिरि दरु चुपद्	वन पर्वत पत्थर वृक्ष-झाड़ी
गड़ डोड़ टुकुते दलोब कन्	नदी डोढ़ा टिलों से ढंका है
किसण दिसुम् छोटानागपुर	— धनी प्रदेश छोटानागपुर
तोड़ेअनए: सोना-चाँदी	— वश में रखा है सोना चांदी
मेणेद् कुइल ताम्बा चुना	लोहा कोयला ताम्बा-चूना
बिर् बुरु दिरि दरु चुपद्	वन पर्वत पत्थर वृक्ष झाड़ी
गड़ डोड़ टुकुते दलोब कन्	नदी डोढ़ा टिलों से अनाछादित है
किसणे दिसुम् छोटानागपुर	— धनी प्रदेश छोटानागपुर
टाटा हटिया बोकारो	— टाटा-हटिया-बोकारो
रउरकेला हर् दुर्गापुर	रउरकेला और दुर्गापुर
कारखाना ने ओते बिल कन्	यहां की भूमि में कारखाने बने हैं
निद सिंगि मेणेद् सेरो: तन्	दिन रात लोहा गल रहा है
किसण दिसुम् छोटानागपुर	— धनी प्रदेश छोटानागपुर
दिसुम् लेलो: बिर् बुरु	— प्रदेश दिखता वन-पर्वत
दरु चुपद् लिदि लिदि	वृक्ष-झाड़ियाँ लदे भरे
बा सोअन् होयो ओटं तन्	पुष्पयुक्त वायु उड़ रहा है
वाउरु बाको चेपे: तन्	भौंरे रस ले रहे हैं
किसण दिसुम् छोटानागपुर	— धनी प्रदेश छोटानागपुर
बिर् जानवर चेणेचिप्रुद्	— वन्य प्राणी पक्षी गण
होनोर् अपिर् बेड़: को	टहल उड़ फिरते रहे हैं
दुकु हरे रनुको ओमोन कन्	दुःख भगाने का दवा उगा है
रेंगे: रड़े: जोको जरोम कन्	भूख मिटाने का फल पका है
किसण दिसुम् छोटानागपुर	— धनी प्रदेश छोटानागपुर
पेरे: अकन तइनो: जओगे	— युगों तक भरा पूरा रहे
दिसुम् अबुअ: कन्क जओगे	प्रदेश हमारा बना रहे
बिर् बुरु दिरि दरु चुपद्	वन पर्वत पत्थर वृक्ष-झाड़ियाँ
गड़ डोड़ टुकुते दलोब कन्	नदी डोढ़ा टिलों से छादित है
किसण दिसुम् छोटानागपुर	— धनी प्रदेश छोटानागपुर

एंगम् अपुम् दुलड़ — तुम माता–पिता का प्यारा

एंगम् अपुम दुलड़	— तुम माता-पिता का प्यारा
होनोर् बेड़:म् सुगड़	प्रिय/प्रिया, तुम घूम फिरते हो
अम् लो:ते होनोर् बेड़ मोनिञ	मुझे तेरे साथ घूमने फिरने का जी करता है
पिरिति सपकि जोड़ए मोनिञ	— प्रीत सहिया जोड़ने का मन करता है
बा बकिड़ि बगइच	— फूल वाटिका-बाग
मालाम् गुतुअ सुगड़	प्रिय/प्रिया, तुम माला बनाते हो
अम् लो:ते बागुतु मोनिञ	मुझे तेरे साथ फूल गुंथने का मन करता है
पिरिति सपकि जोड़ए मोनिञ	— प्रीत सहिया जोड़ने का मन करता है
बुरु पि'टि हटिअ	मेला-हाट-राह
लन्द बेड़:म् सुगड़	प्रिय/प्रिया, तुम हँस फिरते हो
अम् लो:ते लन्द बेड़ मोनिञ	मुझे तेरे साथ हँसने फिरने का जी करता है
पिरिति सपकि जोड़ए मोनिञ	— प्रीत सहिया जोड़ने का मन करता है
अकड़ रे सुसुन् रे	— अखाड़ा में नृत्य में
चलि बलिअम् सुगड़	प्रिय/प्रिया, तुम छैलाते हो
अम् लो:ते चलि बलि मोनिञ	मुझे तेरे साथ चहल पहल का जी करता है
पिरिति सपकि जोड़ए मोनिञ	— प्रीत सहिया जोड़ने का मन करता है

❀

ओते रे सोबेन् को — धरती पे सब को

ओते रे सोबेन् को	— धरती पे सबको
गोनोए: कए: बगे बुअ	हमें मृत्यु न छोड़ेगा
ओ रे ! हाय रे ! उड़: लेरे	ओह ! हाय ! सोचने से
क उड़ु: नमोग	सोचा नहीं जाता है
तइनो: मे चिर्गल् चिमिन्	— होशियार कितना भी रहता
होब:ओअ: दो होब:ओगे	होनहार होकर रहता है
ओरे ! हाय रे ! उड़ु लेरे	ओह ! हाय ! सोचने से

क उड़ : नमोग	— सोचा नहीं जाता है
हस होड़ोमो हस रेगे	— मिट्टी बदन मिट्टी ही में
होयो जी होयो रेगे	पवन प्राण पवन ही में
ओरे ! हायरे ! उड़ु: लेरे	ओह ! हाय ! सोचने से
कउड़ : नमोग	— सोचा नहीं जाता है

❀

## ने जिनिद् चिकन् जिनिद्	## यह जिन्दगी कैसी जिन्दगी
ने जिनिद् चिकन जिनिद्	— यह जिन्दगी कैसी जिन्दगी
निद सिगिञ् उड़ : पिकिर्	मैं दिन-रात चिन्ता फिकर में कि
कुड़म् ञिटर् सेंगेल् जुले तन	छाती में आग जल रही है
सान् लेक जीतअ् लो तन	जलावन की तरह प्राण जल रहे हैं
चिअञ: जोनोम् जन भोगोमन्	प्रभु, मैं किस लिये जन्म लिया
जुगुतु ते सेसेन् मेन:	— रीति से कदम बढ़ाना है
ने जोनोम् जारु रे	इस मानव समुदाय में
कुरुल् कुरुल् जिबोन् असुलेमेन:	— कड़ी मेहनतों से निर्वाह करना है
पेटेल्-पेटेल् जिबोन् सेनो: मेन:	तड़प-तड़प कर प्राण जाना है
चिअ:ञ् जोनोम् जन भोगोमन्	— प्रभु, मैं किस लिए जन्म लिया
ने जिनिद् हेके पापी	— यह जिन्दगी एक पापी है
गोए: जन् दिपिलि रे	मर जाने के पश्चात्
होन् गणरेञ् हेरे तुकए दुकु	मैं बाल-बच्चों में दुःख छोड़ जाऊँगा
सोंगोति हिड़ि तुकइ सोंगोते	जीवन संगिनी को बिछुड़ जाऊँगा
चिअ:ञ् जोनोम् जन भोगोमन्	— प्रभु, मैं किस लिये जन्म लिया

❀

## चिसुगड़ बाको अलन्	## कितने सुन्दर फूल खिले हैं
चिसुगड़ बाको अलन	— कितने सुन्दर फूल खिले हैं
चिनिरल होयो सोअन्	कितना सुन्दर महकता है
चिसुगड़ दगड़-दगिड़ि	कितना सुन्दर युवक-युवतियाँ
इपिल् चन्डु: कोलो:	तारे चाँद के संग
मोदे रेको लन्द जगर तन्	— मिलन में वार्त्तालाप कर रहे हैं

चिसुगड़ अकड़ रे
चिनिरल सड़ि रे
चिसुगड़ दंगड़-दंगिड़ि
इपिल् चन्डु: कोलो:
मोदे रेको सुसुन् दुरं तन्

चिसुगड़ अञो होनं
चिनिरल् हतु रेञ् रे
चिसुगड़ दंगड़-दंगिड़ि
इपिल् चन्डु: कोलो:
मोदे रेले गोले दुरं तन्

चिसुगड़ जोनोम् हतु
चिउलओ कञ् रिंडिए
चिसुगड़ दंगड़-दंगिड़ि
इपिल् चन्डु: कोलो:
मोदे रेले जारु जग़र् केन्

कितना सुन्दर अखाड़ा में
कितना सुन्दर तालों में
कितना सुन्दर युवक-युवतियाँ
तारे चाँद के संग
— मिलन नृत्य गीत गा रहे हैं .

कितना सुन्दर मैं भी
कितना सुन्दर ग्राम में होते
कितना सुन्दर युवक-युवतियाँ
तारे चाँद के संग
मिल सिसकारी गा रहे हैं

— कितना सुन्दर जन्म ग्राम
मैं कभी नहीं भूल सकता
कितना सुन्दर युवक युवतियाँ
तारे चाँद के संग
हम एक में मिल बातें करते थे

होन् कोलं पड़ओ कोअ

नव जुगु हिजु: जन
ओल् पड़ओ मरं जन
ने जुगुरे - ने जुगु रे
होन् कोलं पड़ओ कोअ रे

दुकु सुकु रेंगे: रबं
नेक गेअ जिबोन् रीति
ने जुगु रे-ने जुगु रे
होन् कोलं पड़ओ कोअरे

क ओल् पड़ओअन् रे
मेने मेद्गो जल रे
ने जुगु रे-ने जुगु रे
होन् कोलं पड़ओ कोअरे

हम बच्चों को पढ़ायेंगे

— नया युग आ गया
पढ़ाई-लिखाई महान हुआ
इस युग में-इस युग में
हम बच्चों को पढ़ायेंगे

— दु:ख-सुख गरीब तकलीफ
जीवन में ऐसा ही है
इस युग में इस युग में
हम बच्चों को पढ़ायेंगे

— अशिक्षित रहने से
कहो तो अन्धा ही
इस युग में-इस युग में
हम बच्चों को पढ़ायेंगे

होन् होपोन् संगि रे — बाल-बच्चे अधिक में
इसु बलए पड़ओ रे — पढ़ाना-लिखाना कठिन है,
ने जुगु रे-ने जुगु रे — इस इग में-इस युग में
होन् कोलं पड़ओ कोअ रे — हम बच्चों को पढ़ायेंगे

ओल् पड़ओ तनः दिअ — शिक्षा दिक्षा है दीया
ने जिबोन् होर रेअः — इस जीवन की राह का
ने जुगु रे-ने जुगु रे — इस युग में-इस युग में
होन् कोलं पड़ओ कोअ रे — हम बच्चों को पढ़ायेंगे

❀

ने लेक रिंग रे — ऐसी महंगाई में

ने लेक रिंग रे — ऐसी महंगाई में
होन् होपोन् संगि रे — बाल-बच्चे जादे मैं
जिदन् रे बनोः सुकु — जीवन में सुख नहीं है
रसिक — (और) आनन्द

ओते अड़ि हुड़ि रे — जमीन जयजाद कम में
होन् होपोन् संगि रे — बाल-बच्चे जादा में
कमि उदम् इसु बलए — काम-धन्धा कठिन है
जिदन् रे — जीवन में

ने जुगु रे ओल् पड़ओ — इस युग में पढ़ाई
होड़ोमो रे दिअ बति — बदन में दीप का प्रकाश
कको ओम् दड़ि ओःअ — इन्हें दिया नहीं जा सकता
संगि रे — जादा में

होन् होपोन् हुड़ि रे — बाल-बच्चे कम में
टक-सिक संगि रे — रुपया-पैसे अधिक में
जिदन् रे मेनः सुकु — जीवन में सुख है
रसिक — (और) आनन्द

❀

जुगि लेक चोलोन् ते — भिखारी का भेश में

जुगि लेक चोलोन् ते — भिखारी का भेश में
हिज: लेनए: रावण आसरम् ते — रावण आश्रम आया में
सीता रानी हिड़ि मेन् ते — सीता को ठगने के लिये
तिगुन् जनए: ती अतंकेअ ते — हाथ पसारे खड़ा हो गया

सीता रानी: उडुं लेन — सीता रानी निकल आयीं
लछुमन् चिन दुअर्त: रे — लक्ष्मण चिन्ह द्वार में
ओमइ तनए: जुगि मेन् ते — जोगि समझ उसे दे रही है
सब् कि: अए: रावण इदिकि: रे — रावण ने उसे पकड़ ले गया

दुबे कि: अए: हरोनिरे — उसे रथ पर बैठा लिया
इदि कि: अए: लंका ते — उसे लंका ले गया
इदि कि: अए हिड़ि केअते — ले गया उसे ठग कर
उकु कि: अए: अशोक बा बकिड़ि रे — छिपाया उसे अशोक वाटिका में

❋

गतिञ् दोरे: हिअकन — मेरा प्रिय आया है

गतिञ् दोरे: हिअकन — मेरा प्रिय आया है
टोंगोरि:रे: दुब कन — टोंगरी में बैठा है
दुबे-दुबे रुतुइ: ओरों तन — बैठ-बैठ कर बांसी बजा रहा है
रुतु अयुम् सेनो: मोने तन — बाँसी सुनकर जाने का मन कर रहा है

अकड़ रे दुमं सड़ि — (इधर) अखाड़ा में मन्दर बाजा
गतिको तिंगु तंगि तन — साखियाँ इन्तजार कर रही हैं
दुबे दुबे रुतुइ: ओरों तन — बैठ-बैठ कर बाँसी बजा रहा है
रुतु अयुम् सेनो: मोन तन — बाँसी सुन कर जाने का मन कर रहा है

तर जीदो अकेड़ रे — आधा जी अखाड़ा में
तर जीदो टोंगोरि रे — आधा जी टोंगरी पर
दुबे-दुबे रुतुइ: ओरों तन — बैठ-बैठ कर बाँसी बजा रहा है
रुतु अयुम् सेनो: मोने तन — बाँसी सुन कर जाने का मन कर रहा है

❋

हुपुड़िः हुपुड़िः होन्को — नन्हें मुन्हें बच्चे

हुपुड़िः हुपुड़िः होन्को — नन्हें मुन्हें बच्चे
हर मतओः अपे ओको मुसि ' तुम सब बढ़ोगे चढ़ोगे किसी दिन
दिसुम् अपेअः तीरे हिजुग मुसि— देश तुम्हारा हाथ में आयेगा किसी दिन
अपेगे दिसुम् चलओय ओको मुसि — तुम्हीं देश चलाओगे किसी दिन

ने हड़म् होड़ो को — ये बुढ़े बुजुर्गे
कको तइन ओको मुसि नहीं रहेंगे किसी दिन
दिसुम् अपेअः तीरे हिजुग मुसि— देश तुम्हारा हाथ में आयेगा किसी दिन
अपेगे दिसुम् चलओय ओको मुसि— देश तुम्हीं चलाओगे किसी दिन

सेण बुदिः ज्ञतुन पे — तुम बुद्धिमान ज्ञानी बनो
होर डरे चिनन् पे राहों को पहचानो
दिसुम् अपेअः तीरे हिजुग मुसि —देश तुम्हारा हाथ में आयेगा किसी दिन
बयुमपे नेहरु गाँधो ओको मुसि — बनोगे नेहरु गांधी किसी दिन

❀

राँची जपः हटिया — राँची के समीप हटिया

राँची जपः हटिया — राँची के समीप हटिया
सेणेद् मिसिन् कारखाना लोहे मसीन - कारखाना
लेल् तेदो बनोः जेतन् मुन्डि देख कर कोई थाह नहीं लगता
अञ्दो लेल्तेञ् दन्द गिड़ि जन — मैं तो देख कर चकित हुआ

चिल्कते सेसेन तन — कैसे चल रही है
चिलकते बइ तन कैसे बन रहा है
लेल् तेदो बनोः जेतन् मुन्डि देख कर कोई थाह नहीं लगता
अञ्दो लेल्तेञ् दन्द गिड़ि जन — मैं तो देख कर चकित हुआ

चिलकते वइ तन — कैसे बन रही है
मोटोर् गड़ि सईकिल् मोटर गाड़ी साइकिल
लेल् देतो बनोः जेतन् मुन्डि देख कर कोई थाह नहीं लगता
अञ्दो लेल् तेञ् दन्द गिड़ि जन मैं तो देख कर चकित हुआ

❀

अम् होनं कोम्बोल् बा

अम् होनं कोम्बोल् बा
अञ् होनं हुरुम् सुकु
निद सिंगि बागेञ् चेपेग
अञ्गे होनंएम् लेल् दरोम
अम् होनं गरोअ रेदो
अञ् होनं केअद् रेदो
गरोअ बितर्रेञ तइन
रसिक तेञ् केरेडोरेय
डिन्ड सोमए बा लेक
निद सिंगि बागेञ् लेकः
दुलड़ अम् कम् तइनोः रे
एसेकर् रे बनोः रसिक

अगर तुम कमल फूल

— अगर तुम कमल का फूल (और)
अगर मैं भौंरा होता
दिन-रात रस चूसता रहता
तुम मेरा इन्तजार करती
— अगर तुम पिंजड़ा होती
(औ) अगर मैं तोता होता
मैं पिंजड़ा के अन्दर रहता
आनन्द से मैं हंसता-बोलता,
— युवा अवस्था फूल सा
मैं रात-दिन फूल गिनता
प्रिया, तुम जब नहीं रहती
— अकेलापन मन नहीं लगता

❀

अबु हतु अकेड़

अबु हतु अकेड़
जओरसिक अकेड़
डुल्कि सड़िअ मेतम् सड़ि रुम्बुल
अलए-बलए जीरे हिजुः मोने
ओल् पड़ओ हम्बल्
सड़ि तन इसु रबल्
डुलकि सड़िअ मेतम् सड़ि रुम्बुल
अलए-बलए जीरे हिजुः मोने
एंग को एरं रेओ
अपुको सेगेद् रेआ
डुल्कि सड़िअ मेतम् सड़ि रुम्बुल
अलए-बलए जीरे हिजुः मोने

हमारा गाँव का अखाड़ा

— हमारा गाँव का अखाड़ा
युगों का रसिक अखाड़ा
ढोल बजता है प्रिय गूंज भरता है
— अकबक दिल में आने का मन करता है
पढ़ना-लिखना कठिन है
बज रहा है बहुत स्पष्ट
— प्रिय, ढोल बजता है गूंज भरता है
दिल में अकबक आने का मन करता है
— माताएं गाली देतीं
पिताएं गाली देते
प्रिय, ढोल बजता है गूंज भरता है
दिल में अकबक आने का मन करता है

❀

जोनोम् कि: ञम् प्रभु	प्रभु, तूने मुझे जन्म दिया
जोनोम् कि:ञम् प्रभु	— प्रभु तूने मुझे जन्म दिया
लिंगितन द:रेम् अतुकि:ञ	जीवन धारा में मुझे बहा दिया
अपन् कि:ञम् प्रभु	प्रभु तूने मुझे उत्पन्न किया
जले तन् सेंगेल् रेम् अतर कि:ञ	जीवन की ज्वाला में मुझे जला दिया
अतु तनञ् प्रभु	— प्रभु, मैं लड़खड़ा रहा हूं
लिंगि तन् द:रेञ् अतुतन	जीवन की धारा में लड़खड़ा रहा हूं
अतर् तनञ् प्रभु	प्रभु, मैं झुलस रहा हूं
जुले तन् सेंगेल् रेञ् अतरे तन	जीवन ज्वाला से झुलस रहा हूं
ओअरिञ् मे प्रभु	— प्रभु मुझे बचाओ
लिंगि तन् द:रेञ् अतु तन	जीवन राह में लड़खड़ा रहा हूं
अतंइञ् मे प्रभु	प्रभु, मुझे वस में लो
जुले तन् सेंगेल् रेञ् अतरे तन	जीवन ज्वाला में झुलस रहा हूं

❀

सुकनबुरुञ् रकब् केन	मैं सुकन पहाड़ पर चढ़ था
सुकन् बुरुञ् रकब केन	— मैं सुकन पहाड़ पर चढ़ा था
बुन्ड् बन्द दो, बिजिरेकेन	बुन्डु तालाब, झिलमिला रहा है
बुन्डु बन्द दो, बिजिरेकेन	बुन्डू तालाब झिलमिला रहा है
लेंग स:रेञ: हेत लेद	— मैं बांये की ओर देखा था
रांची शहर दो, जिलिबेकेन	राँची शहर झिलमिला रहा है
राँची शहर दो, जिलिबेकेन	रांची शहर झिलमिला रहा है
दोल तिबु लेल् लेअ	— चलो तो हम देख ले
बुन्डु बन्द दो, बिजिरेकेन	बुन्डु तालाब झिलमिला रहा है
बुन्डु बन्द दो, बिजिरेकेन	बुन्डु तालाब झिलमिला रहा है
मरे तिबु चिन लेअ	चलो तो हम पहचान ले
राँची शहर दो जिलिबेकेन	राँची शहर झिलमिल कर रहा है
राँची शहर दो जिलिबेकेन	राँची शहर झिलमिल कर रहा है

अले दोले लेल् लेद	— हम सब ने तो देखा था
बुन्डु बन्द दो, बिजिरेकेन	बुन्डु तालाब झिलमिला रहा है
बुन्डु बन्द दो, बिजिरेकेन	बन्डु तालाब झिलमिला रहा है
अले दोले चिन लेन	— हम सब ने तो पहचाना था
राँची शहर दो जिलिबेकेन	राँची शहर झिलमिला रहा है
राँची शहर दो, जिलिबेकेन	राँची शहर झिलमिला रहा है

सरना सुब — सरना थान

जोतो आदिवासी को	— हम सब आदिवासी
अयुमेपे हग को	सुनो भाईयों
सर्ना सुबबु जोअरे, कबु बगेअ	हम सरना को नमन करेंगे नहीं छोड़ेंगे
सरना सुबबु जोअरे, कबु बगेअ	हम सरना को नमन करेंगे नहीं छोड़ेंगे
बुरु बिर् हतु तबु	— पर्वत-वन गाँव हमारा
द: ओते दिसुम् तबु	समुद्र-तल- देश हमारा
सर्ना सुबबु जोअरे, कबु बगेअ	हम सरना को नमन करेंगे नहीं छोड़ेंगे
सर्ना सुबबु जोअरे, कबु बगेअ	हम सरना को नमन करेंगे नहीं छोड़ेंगे
बुरु गेबु महादेवइ	— बुरु ही महादेव है
इकिर गेबु पार्वती	इकिर् ही पार्वती है
सर्ना सुबबु जोअरे, कबु बगेअ	सर्ना को हम नमन करेंगे नहीं छोड़ेंगे
सर्ना सुबबु जोअरे, कबु बगेअ	सर्ना को हम नमन करेंगे नहीं छोड़ेंगे
नि गेदो शिवलीओ	— यहीं तो शिव है
नि गेदो दुर्गाओ	यही तो दुर्गा भी
सर्ना सुबबु जोअरे, कबु बगेअ	सर्ना को हम नमन करेंगे नहीं छोड़ेंगे
सर्ना सुबबु जोअरे, कबु बगेअ	सर्ना को हम नमन करेंगे नहीं छोड़ेंगे

देअन् तन चिरेम् धोरोम् तन—प्रिय, तुम ध्यान में हो या धर्म में

देअन् तन चिरेम् धोरोम् तन	— प्रिय, तुम ध्यान में हो या धर्म में
दरु सुब रे रेम् दुब कन	तुम पेड़ के नीचे बैठे हो
दरु सुब रे रेम् दुब कन	तुम तेड़ के नीचे बैठे हो

दुअन् तन चिरेम् दुपु तन		धुना पोड़ा रहे हो या धूप कर रहे हो
सेंगेल् तयोमे रेम् दुब कन		अग्नि के पीछे बैठे हो
सेंगेल् तयोमे रेम् दुब कन		अग्नि के पीछे बैठे हो
देअन् कगे बोले धोरोमो कगे	—	प्रिया, ध्यान ही नहीं या धर्म ही
अम् तिंगु तंगि रे रेञ् दुब कन		मैं तेरी इन्तजार में बैठा हूं
अम् तिंगु तंगि ते रेञ् दुब कन	—	मैं तेरी इन्तजार में बैठा हूं
दुमन कगे बोले दुपु कगे	—	धुना ही नहीं या धर्म ही
अम् तिंगु तंगि तेरेञ् रबं जन		मुझे तेरी इन्तजार में जाड़ाया
अम् तिंगु तंगि तेरेञ रबं जन		मुझे तेरी इन्तजार में जाड़ाया
कचिरेम् लेले जद दरु सुब रे	—	प्रिय, क्या तुम पेड़ के नीचे नहीं देखता
दरु पतड़ दोञ् पेटेः अकद		मैं पेड़ का पत्ता तोड़ रखी हूं
दरु पतड़ दोञ् पेटेः अकद		मैं पेड़ का पत्ता तोड़ रखी हूं
कचिरेम् चिन् जद ओते रे मंड		प्रिय, क्या तुम जमीन में पंजा न देखा
गितिल् रे कट मंडञ् बगे तद		मैं बालू में पद चिन्ह छोड़ी हूं
गितिल् रे कट मंडञ् बगे तद		मैं बालू में पद चिन्ह छोड़ी हूं

—: समाप्त :—

अशुद्धि - शुद्धि तालिका

मुद्रित शब्द	कृपया पढ़ें	पेज
अयुअन	उयुअन्	१
औकोए	ओकोए	१
बड़इलेद	बड़:इलेद	१
बइयकद	बइअकद	१
चन्ड:	चन्ड़:	३
ओपित	ओपोत	५
हेअप्रति	हेअति	६
चकसिनञ्	चकतिसनञ्	६
बगुटु	बा गुटु	६
मेअं	मेअ	७
बुड़इअ	बड़:इअ	७
बड़:इअ	बड़ुःइअ	७
बुन्ड	बुन्डू	८
इतुन्	इतुअन्	८
रेणु	रनु	९
तद	तन	१०
मेनेअं	मेनेअ	११
मन	मइन	११
चन्ड़:	चन्ड़ु:	१३
पिउंको	पिउंको	१३
उरुड़	उरुड़	१३
सुड	सुड़	१३
डगड़	दगड़	१४
तचि	तेचि	१५
ली:मु	लोःम्	१७
ने	मे	१८
मेअं	मेअ	२१
कुड़दुदु	कुड़ुदुदु	२२

मुद्रित शब्द	कृपया पढ़े	पेज
सुझुबु	सुकुबु	२२
सिर्मय	सिर्मञ्	२४
सिरञ्	सिर्म	२४
गोअरि	गोअरि	२८
रले	रसे	२८
ताअ	तोअ	२८
औकोए	ओकोए	३०
कष्टो	किस्टो	३२
दतम्	दुतम्	३३
मोनेअं	मोनेअ	३९
परोमेअं	परोमेअं	४१
गुड़गुड़इ	गुड़गुड़इ .	४२
बिटर	बितर्	४६
चिअञ्:	चिअ:ञ्	४५
ञतुन्	इतुन्	५३

हिन्दी में कई अशुद्धियाँ छप गई है कृपया सुधार कर पढ़ें

अशुद्ध	शुद्ध
अदृष्य	अदृश्य
साखियाँ	सखियाँ
छुट	छूट
गुंज	गूंज
फुल	फूल
मंदर	मांदर
दुँ	दूँ
वधु	वधू
गाय की दूध	गाय का दूध
साखी	सखि

लेखक परिचय :–
सिकरा दास तिर्की
एम. ए. (मुण्डारी)

जन्म - सन् १९५४ के आसपास
ग्राम - भण्डरा (खूंटी)
जिला - राँची (बिहार)